मुंबई(महाराष्ट्र) से प्रकाशित
हिन्दी दैनिक

उत्तरशक्ति

हर खबर निष्पक्षता के साथ

मुंबई
वर्षः 8 अंक 70
शुक्रवार, 19 सितम्बर 2025
मूल्य 3 रुपए, पृष्ठ-6
RNI NO. MAHHIN/2018/76092
email ID- uttarshaktinews@gmail.com
www.uttarshaktinews.com

स्वस्थ नारी, सशक्त परिवार अभियान का पीएम ने किया ऑनलाइन शुभारंभ

नई दिल्ली, 18 सितम्बर। महिला स्वास्थ्य सुरक्षा और उनके सशक्तिकरण के लिए चलाए जाने वाले स्वस्थ नारी, सशक्त परिवार अभियान का शुभारंभ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के हाथों ऑनलाइन किया गया। इस अवसर पर पटना के इंदिरा गांधी आयुर्विज्ञान संस्थान (आईजीआइएमएस) परिसर में एक भव्य कार्यक्रम आयोजित हुआ। जिसमें पहुंचने वाले लोगों का निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण किया गया। चिकित्सकों ने अपना कुशल परामर्श दिया। रोगियों को दवाइयां भी मुफ्त में दीं गईं।

इस कार्यक्रम में राज्यपाल आरिफ मुहम्मद खान, उपमुख्यमंत्री विजय कुमार सिन्हा और स्वास्थ्य मंत्री मंगल पांडेय मौजूद थे। इस अवसर पर राज्य स्वास्थ्य समिति के पदाधिकारियों के साथ ही महिला जन प्रतिनिधि, जीविका, आंगनबाड़ी सेविका और सहायिका, आशा कार्यकर्ता और स्वास्थ्य केंद्रों के कर्मचारी मौजूद रहे। यहां उपस्थिति लोगों ने मध्य प्रदेश के धार जिले में आयोजित प्रधानमंत्री के कार्यक्रम का वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से अवलोकन किया और उनके संबोधन को सुना।

पीएम ने कहा, आज कौशल और निर्माण के देवता भगवान विश्वकर्मा का जयंती है। अपने कौशल से राष्ट्र निर्माण में लगे करोड़ों भाइयों और बहनों को भी विश्वकर्मा जयंती के उपलक्ष्य में आदर पूर्वक प्रणाम करता हूं। हमने ऑपरेशन सिंदूर से आतंकी ठिकानों को उजाड़ दिया है। वीर जवानों ने पलक झपकते ही पाकिस्तान को घुटनों पर ला दिया। ये नया भारत है। ये किसी की परमाणु धमकियों से डरता नहीं है। हम घर में घुसकर मारते हैं। पीएम मोदी ने कहा, आज 17 सितंबर को एक और ऐतिहासिक अवसर है। आज ही के दिन देश ने सरदार पटेल की फौलादी इच्छाशक्ति के उदाहरण को देखा था। भारतीय सेना ने हैदराबाद को अनेकों अत्याचारों से मुक्त कराकर उनके अधिकारों की रक्षा करके भारत के गौरव को फिर से स्थापित किया। सेना के इतने बड़े शौर्य को कई दशक बीत गए। कोई याद करने वाला नहीं था। हमारी सरकार ने 17 सितंबर हैदराबाद की घटना को अमर कर दिया है। हमने भारत के एकता के प्रतीक इस दिन को हैदराबाद लिबरेशन डे के रूप में मनाने का निर्णय लिया है। उन्होंने कहा कि हमारा हर पल देश के लिए समर्पित होना चाहिए। देश के 140 करोड़ लोगों ने विकसित भारत बनाने का संकल्प लिया है। इसके चार स्तंभों को नई मजबूती देने का काम हुआ है। बड़ी संख्या में माताएं, बहनें, बेटियां आईं हैं। आज के आयोजन में नारी शक्ति का बहुत ध्यान रखा गया है। यह कार्यक्रम भले ही धार में हो रहा है। लेकिन यह पूरे देश में हो रहा है। यहां से स्वस्थ नारी, सशक्त परिवार के महा अभियान का शुभारंभ हो रहा है। अभियान धार समेत एमपी के जनजातीय समाज को विभिन्न योजनाओं से जोड़ने का सेतु बनेगा। विश्वकर्मा जयंती पर भी आज एक बड़े औद्योगिक शुरूआत भी होने जा रही है।

पीएम ने कहा कि सबसे बड़े इंटीग्रेटेड टेक्सटाइल पार्क का शिलान्यास यहां हुआ है। इस पार्क से भारत के टेक्सटाइल्स इंडस्ट्री को नई ऊर्जा, किसान को उनके मेहनत का उचित मूल्य मिलेगा। इस टेक्सटाइल्स पीएम मित्र पार्क से बड़ी संख्या में युवाओं को रोजगार मिलेगा।

अब हमें निर्वाचन आयोग के अंदर से मदद मिलनी शुरू हो गई है : राहुल गांधी

नई दिल्ली, 18 सितम्बर। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने बृहस्पतिवार को दावा किया कि वोट चोरी के मुद्दे पर अब उन्हें निर्वाचन आयोग के अंदर से मदद मिल रही हैं और सूचनाएं उन तक पहुंच रही हैं।

उन्होंने कहा कि लोकतांत्रिक व्यवस्था की रक्षा करने का काम उनका नहीं, बल्कि संस्थाओं का है, लेकिन संस्थाओं के अपना काम नहीं करने के कारण वह बतौर नेता प्रतिपक्ष यह जिम्मेदारी निभा रहे हैं।

कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष ने मुहिम के क्रम में बृहस्पतिवार को मतदाता सूचियों से कांग्रेस समर्थक मतदाताओं के नाम हटाए जाने का विषय उठाया और आरोप लगाया कि मुख्य निर्वाचन आयुक्त ज्ञानेश कुमार लोकतंत्र की हत्या करने वालों तथा वोट चोरों की रक्षा कर रहे हैं।

निर्वाचन आयोग ने उनके आरोपों को गलत और निराधार करार दिया। राहुल गांधी ने एक सवाल के जवाब में संवाददाताओं से कहा, निर्वाचन आयोग के अंदर से हमें मदद मिलनी शुरू हो गई है। यह रुकने वाला नहीं है। उनका कहना था कि एक बार देश की जनता और युवाओं को पता लग गया कि वोट चोरी हो रही है तो इसे रोकने के लिए वे अपनी ताकत लगा देंगे। राहुल गांधी ने वोट चोरी के विषय पर न्यायालय जाने की संभावना से जुड़े सवाल पर कहा, सच कहूं तो, मैं यहां जो कर रहा हूं, वह मेरा काम नहीं है। मेरा काम लोकतांत्रिक व्यवस्था में भागीदारी करना है। मेरा काम लोकतांत्रिक व्यवस्था की रक्षा करना नहीं है। यह काम भारत की संस्थाओं का है; वे ऐसा नहीं कर रही हैं, इसलिए मुझे करना पड़ रहा है। उन्होंने कहा, हमारी प्रस्तुति के अंत तक, जिसमें 2-3 महीने लगेंगे, आपके मन में इस बात को लेकर कोई संदेह नहीं रहेगा कि भारत में राज्य दर राज्य, लोकसभा दर लोकसभा चुनाव, वोटों की चोरी होती रही है।

दिल्ली की मुख्यमंत्री गुप्ता ने सेवा पखवाड़ा के तहत 502 क्रेच का उद्घाटन किया

नई दिल्ली, 18 सितम्बर। दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने सेवा पखवाड़ा अभियान के तहत बृहस्पतिवार को 502 क्रेच का उद्घाटन किया और कहा कि इस पहल से हजारों माताओं को बच्चों की देखभाल की चिंता किए बिना अपने सपनों को पूरा करने में मदद मिलेगी।

उन्होंने कहा कि उनकी सरकार महिला सशक्तीकरण के लिए एक नयी योजना पर भी काम कर रही है जिसके तहत सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (एमएसएमई) क्षेत्र के माध्यम से महिलाओं को 10 करोड़ रुपये तक की ऋण सुविधा प्रदान की जायेगी। मुख्यमंत्री ने कहा, यह पालना कार्यक्रम हजारों माताओं

को आगे बढ़ने और अपनी आकांक्षाओं को पूरा करने का मार्ग प्रदान करेगा। अपने व्यक्तिगत अनुभव साझा करते हुए गुप्ता ने राजनीति में अपने शुरूआती वर्षों की चुनौतियों को याद किया, जब उनके बच्चे छोटे थे। उन्होंने कहा, उस समय मैं अक्सर सोचती थी कि मेरे बच्चों की देखभाल कौन करेगा। मेरी बहन ने ही यह जिम्मेदारी संभाली थी। आज यह भूमिका हमारे शिशु गृह और आंगनवाड़ी कार्यकर्ता निभाएंगे।

मुख्यमंत्री ने कार्यकताओं से कहा कि वे सिर्फ कर्मचारी नहीं हैं, बल्कि इन केंद्रों में आने वाले दिल्ली के बच्चों की मौसी हैं। उन्होंने महिला एवं बाल विकास सचिव रश्मि सिंह से यह निर्देश जारी करने को कहा कि क्रेच और आंगनवाड़ी कार्यकताओं को औपचारिक रूप से मौसी के नाम से संबोधित किया जाए। उन्होंने कहा, इस तरह वे मां जैसा स्नेह दे पाएंगी। लेकिन मैं यह भी कहना चाहती हूं कि घर पर मां को अपने बच्चों की देखभाल खुद ही करनी चाहिए, क्योंकि उनकी जगह कोई नहीं ले सकता।

पुणे में कार और ट्रक की टक्कर से दो छात्रों की मौत, दो अन्य घायल

पुणे, 18 सितम्बर। महाराष्ट्र के पुणे जिले में बृहस्पतिवार सुबह मुंबई-बेंगलुरु राजमार्ग पर एक कार के ट्रक से टकरा जाने की घटना में कम से कम दो कॉलेज छात्रों की मौत हो गई, जबकि दो अन्य घायल हो गए। पुलिस ने यह जानकारी दी।

पुलिस के अनुसार, यह दुर्घटना सुबह लगभग पौने छह बजे देहू रोड स्थित ईदगाह मैदान के पास हुई, जब चार छात्र लोनावला हिल स्टेशन से लौट रहे थे। देहू रोड थाने के एक अधिकारी ने बताया कि कार ने एक ट्रक को पीछे से टक्कर मार दी। चारों छात्र सिंबायोसिस कॉलेज में बीबीए की पढ़ाई कर रहे थे और वे घूमने के लिए लोनावला गए थे। हादसा उस समय हुआ जब वे पुणे लौट रहे थे।

अधिकारी ने बताया, दुर्घटना में दिव्य राज सिंह राठौड़ (20) और सिद्धांत आनंद शेखर (20) की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि दो अन्य छात्र हर्ष मिश्रा (21) और निहार तंबोली (20) मामूली रूप से घायल हुए हैं।

उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया है। पुलिस ने बताया कि मुंबई के वडाला निवासी ट्रक चालक मनीष कुमार सूरज मणिपाल (39) को हिरासत में ले लिया गया है और मामले की जांच जारी है।

गाजा में हो रही पीड़ा से व्यथित हूं, भारत को दृढ़ता से बोलना चाहिए: स्टालिन

तमिलनाडु, 18 सितम्बर। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम के स्टालिन ने बृहस्पतिवार को कहा कि गाजा में लोगों को हो रही पीड़ा से वह अत्यंत व्यथित हैं और इस मामले में सरकार को दृढ़ता से बोलना चाहिये स्टालिन ने जोर देकर कहा कि भारत को इस मुद्दे पर स्पष्ट और दृढ़ स्वर में बोलना चाहिए तथा विश्व समुदाय को इस भयावहता को समाप्त करने के लिए एकजुट होना चाहिए।

उन्होंने सोशल मीडिया पोस्ट में कहा, गाजा कराह रहा है, दुनिया को आंखें मूंदे नहीं रहना चाहिए। गाजा में जो कुछ हो रहा है, उसे देखकर मैं शब्दों से परे व्यथित हूं। हर दृश्य हृदय विदारक है – नवजातों की चीखें, भूख से तड़पते बच्चे, अस्पतालों पर बमबारी, और संयुक्त राष्ट्र की जांच आयोग द्वारा घोषित किया गया नरसंहार – यह सब मिलकर उस पीड़ा को दशार्ते हैं, जो किसी भी इंसान को कभी नहीं झेलनी चाहिए। उन्होंने आगे लिखा, जब निर्दोष लोगों का इस तरह से दमन किया जा रहा हो, तो चुप्पी कोई विकल्प नहीं हो सकती। हर जमीर को जागना चाहिए। भारत को दृढ़ता से अपनी बात रखनी चाहिए, दुनिया को एकजुट होना चाहिए और हमें मिलकर इस भयावहता को अभी समाप्त करना होगा।

'पीएम मोदी की कूटनीति विफल': कांग्रेस ने सऊदी-पाक रक्षा समझौते पर जताई गहरी चिंता

नई दिल्ली, 18 सितम्बर। कांग्रेस पार्टी ने गुरुवार को पाकिस्तान और सऊदी अरब के बीच हुए रक्षा समझौते पर गंभीर चिंता जताई और इसे भारत के सुरक्षा हितों के लिए एक झटका और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की बहुप्रचारित व्यक्तित्व-आधारित कूटनीति की विफलता बताया। पर एक सोशल मीडिया पोस्ट में, कांग्रेस सांसद जयराम रमेश ने ऑपरेशन सिंदूर पर रोक के बाद हुई घटनाओं की श्रृंखला की ओर इशारा किया, जिसमें प्रधानमंत्री मोदी की चीन यात्रा के ठीक बाद अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की पाकिस्तानी सेना प्रमुख असीम मुनीर से मुलाकात और चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग की पाकिस्तान के राष्ट्रपति आसिफ अली जरदारी से मुलाकात शामिल है, जो भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए गंभीर चिंता का विषय है।

सोशल मीडिया पोस्ट में लिखा है कि ऑपरेशन सिंदूर को अचानक रोकने के एक महीने बाद, राष्ट्रपति ट्रंप ने फील्ड मार्शल असीम मुनीर को सदन में दोपहर के भोजन पर आमंत्रित किया - वही व्यक्ति जिसके भड़काऊ, भड़काऊ, सांप्रदायिक रूप से जहरीले बयानों ने अप्रैल 2025 में पहलगाम में हुए क्रूर आतंकवादी हमलों को हवा दी थी। उन्होंने कहा कि हमारे प्रधानमंत्री की बहुप्रचारित चीन यात्रा के कुछ ही दिनों बाद,

राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने पाकिस्तान के राष्ट्रपति आसिफ अली जरदारी के लिए चीन के गुप्त सैन्य परिसर के द्वार खोल दिए। अब, सऊदी अरब - जहाँ 22 अप्रैल, 2025 को पहलगाम आतंकवादी हमलों के दौरान प्रधानमंत्री मौजूद थे - ने पाकिस्तान के साथ एक ₹सामरिक पारस्परिक रक्षा₹ समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। रमेश ने पर पोस्ट किया कि यह सब निस्संदेह भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए गंभीर चिंता का विषय है। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस इस पर गहरी चिंता व्यक्त करती है और इसे हमारे प्रधानमंत्री की बहुप्रचारित व्यक्तित्व-चालित कूटनीति के लिए एक और झटका मानती है। यह टिप्पणी सऊदी अरब और पाकिस्तान द्वारा एक ₹सामरिक पारस्परिक रक्षा समझौते पर हस्ताक्षर करने के बाद आई है, जिसमें यह वचन दिया गया है कि किसी भी देश के विरुद्ध किसी भी आक्रमण को दोनों पर हमला माना जाएगा।

क्वालिटी बार मामले में आजम खान को मिली जमानत

इलाहाबाद। इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने समाजवादी पार्टी (सपा) के वरिष्ठ नेता आजम खान को रामपुर जिले में क्वालिटी बार को कथित तौर पर हड़पने के एक आपराधिक मामले में बृहस्पतिवार को जमानत दे दी। यह आदेश न्यायमूर्ति समीर जैन द्वारा पारित किया गया जिन्होंने 21 अगस्त, 2025 को संबंधित पक्षों को सुनने के बाद अपना निर्णय सुरक्षित रख लिया था। तथ्यों के मुताबिक 2019 में राजस्व निरीक्षक अंगराज सिंह द्वारा सैयद जाफर अली जाफरी, आजम खान की पत्नी तंजीन फातिमा, उनके बेटे एवं पूर्व विधायक अब्दुल्ला आजम के खिलाफ बार हड़पने के संबंध में प्राथमिकी दर्ज कराई थी।

आतिशबाजी रहित उत्सवों की परम्परा का सूत्रपात हो

–ललित गर्ग

पर्यावरण संकट हमारे समय की सबसे बड़ी चुनौती बन चुका है। बढ़ता प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक संसाधनों की लगातार हो रही क्षति ने जीवन को असहज और असुरक्षित बना दिया है। यह संकट किसी दूर के भविष्य की चिंता नहीं है, बल्कि हमारे रोजमर्रा के जीवन को प्रभावित कर रहा है। राजधानी दिल्ली इसका सबसे जीवंत उदाहरण है, जहाँ दीपावली और अन्य त्योहारों के बाद वायु गुणवत्ता इतनी खराब हो जाती है कि सांस लेना तक मुश्किल हो जाता है। इसका एक प्रमुख कारण पटाखों का प्रयोग है। पटाखे और आतिशबाजी कुछ क्षणों के लिए उत्सव का शोर और रोशनी जरूर बिखेरते हैं, लेकिन उनके पीछे छूट जाता है जहरीला धुआं, असहनीय शोर, सांस लेने में तकलीफ और एक असंतुलित वातावरण। इस स्थिति में दिल्ली व राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में पटाखों पर अंकुश लगाने के संदर्भ में देश की शीर्ष अदालत की टिप्पणी संवेदनशील और मार्गदर्शक होने के साथ-साथ जनजागरूकता बढ़ाने वाली है। कोर्ट ने सख्त लहजे में कहा कि यदि साफ वायु राष्ट्रीय राजधानी के विशिष्ट लोगों का हक है तो यह हक शेष देश के हर व्यक्ति को भी मिलना चाहिए। दिल्ली ही नहीं, सम्पूर्ण देश में वायु प्रदूषण को नियंत्रण करना जरूरी है।

दुनिया भर के प्रदूषित देशों में भारत पांचवें नंबर पर है, दुनिया के सबसे ज्यादा प्रदूषित शहर भी हमारे ही देश में हैं, ऐसे तेरह शहर दुनिया के शीर्ष बीस प्रदूषित शहरों में शुमार हैं, इन चिन्ताजनक हालातों में हवा को जहरीला बनाने वाले पटाखे निरंकुश रूप से जलाना एक आत्मघाती कदम ही है। पटाखों के दुष्प्रभाव स्पष्ट और प्रमाणित हैं। वे वातावरण में जहरीली गैसों का उत्सर्जन करते हैं, जिससे हवा की गुणवत्ता अचानक बेहद खराब हो जाती है। दीपावली की रात पटाखों से निकलने वाला धुआं कई दिनों

तक हवा में बना रहता है और सांस की तकलीफ, आंखों में जलन, हृदय रोग और दमा जैसी बीमारियों को और गंभीर कर देता है। पटाखों से होने वाला ध्वनि प्रदूषण बच्चों, बुजुर्गों और बीमार लोगों के लिए भय और असहनीय पीड़ा का कारण बनता है। पशु-पक्षियों की स्थिति भी दयनीय हो जाती है, उनके जीवन में असुरक्षा और बेचैनी घुल जाती है। यह सब जानते हुए भी आतिशबाजी को लेकर समाज में अब भी ढिलाई और परंपरा के नाम पर अनदेखी जारी रहना दुर्भाग्यपूर्ण एवं विडम्बनापूर्ण है।

दिल्ली और आसपास के क्षेत्रों में दीपावली के बाद की स्थिति किसी आपदा से कम नहीं होती। पिछले वर्ष दीपावली के दौरान दिल्ली के कई इलाकों में वायु गुणवत्ता सूचकांक यानी एक्यूआई 300 से ऊपर चला गया और ‘बहुत खराब’ से ‘गंभीर’ श्रेणी में दर्ज हुआ। यह हर साल का दोहराया जाने वाला दृश्य है और हर साल सरकार, समाज और न्यायपालिका को इसे लेकर चिंतित होना पड़ता है। सुप्रीम कोर्ट ने भी इस विकट स्थिति को गंभीरता से लिया है और हाल के वर्षों में बार-बार स्पष्ट किया है कि केवल दिल्ली ही नहीं, बल्कि पूरे देश में पटाखों पर रोक लगनी चाहिए। सुप्रीम कोर्ट की टिप्पणी के आलोक में हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि अब चाहे दुनिया का सबसे प्रदूषित शहर बनीर्हाट हो या पंजाब व राजस्थान के सबसे अधिक प्रदूषित शहर हों, उन्हें भी पटाखों के नियमन का लाभ मिलना चाहिए। हाल ही में अदालत ने सरकारों को यह सुनिश्चित करने के निर्देश दिए कि पटाखों के उत्पादन, बिक्री और भंडारण पर पूर्ण रोक हो, और जो भी इन नियमों का उल्लंघन करे उसके खिलाफ कठोर कार्रवाई की जाए। अदालत का यह रुख केवल कानूनी आदेश नहीं है, बल्कि समाज को चेताने वाला संदेश भी है कि अब हमें अपने उत्सवों की परिभाषा बदलनी होगी।

दिल्ली सरकार ने भी सुप्रीम कोर्ट के आदेशों के अनुरूप पर्यावरण संरक्षण अधिनियम की धारा 5 के तहत पटाखों पर पूर्ण और स्थायी प्रतिबंध लागू किया है। इस प्रतिबंध के अनुसार न तो पटाखों का उत्पादन हो सकता है, न बिक्री और न ही भंडारण या उपयोग। यह कदम पर्यावरण और नागरिकों के स्वास्थ्य की रक्षा के लिए जरूरी था। लेकिन केवल सरकारी आदेश और अदालत के निर्देश काफी नहीं होंगे, जब तक समाज स्वयं अपनी सोच और व्यवहार में बदलाव नहीं लाता। परंपराओं को बदलने में समय लगता है, लेकिन जैसे लोग धीरे-धीरे प्लास्टिक के खिलाफ खड़े हुए और विकल्प तलाशने लगे, वैसे ही आतिशबाजी से मुक्त त्योहारों को भी अपनाया जा सकता है। सवाल यह है कि हम लोग क्यों नहीं सोचते कि हमारे पटाखे जलाने से श्वास रोगों से जूझते तमाम लोगों का जीना दुश्वार हो जाता है। यह एक हकीकत है कि देश के तमाम शहरों में हवा ही नहीं, पानी व मिट्टी तक में जहरीले तत्वों का समावेश हो चुका है। जो न केवल हमारी आबोहवा के लिये बल्कि हमारे शरीर के लिये भी घातक साबित हो रहा है। यही वजह है कि हाल के वर्षों में देश में श्वसन तंत्र से जुड़े रोगों में अप्रत्याशित वृद्धि हुई है। साथ ही प्रदूषित हवा के प्रभाव में सांस संबंधी रोगों से लोगों के मरने का आंकड़ा भी बढ़ा है।

कहीं न कहीं हमारे वातावरण में बढ़ता प्रदूषण ग्लोबल वार्मिंग बढ़ाने वाले कारकों में वृद्धि भी कर रहा है। लेकिन पटाखों से होने वाला प्रदूषण ऐसा है जो हमारे संयम के जरिये रोका जा सकता है। चिंता की बात यह है कि पटाखों के जलने से निकलने वाले कण हमारे श्वसनतंत्र को नुकसान पहुंचाने के साथ ही हमारे खून में घुल रहे हैं। जिसमें पीएम 2.5 और पीएम 10 जैसे महीन कण फेफड़ों में प्रवेश करके गंभीर रोगों को जन्म दे रहे हैं। इतना ही नहीं पटाखे जलाने के कारण जहरीली रासायनिक गैसों के रिसाव से हमारे पारिस्थितिकीय तंत्र को गंभीर क्षति पहुंच रही है। इससे ओजोन परत भी क्षतिग्रस्त हो रही है। साथ ही ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन भी हमारे वायुमंडल में जलवायु परिवर्तन के संकटों को बढ़ाने में भूमिका निभा रहा है।

त्योहार और उत्सव हमारे जीवन का हिस्सा हैं। वे सामाजिक जुड़ाव, सांस्कृतिक गौरव और सामूहिक खुशी का प्रतीक हैं। लेकिन जब खुशी मनाने का तरीका ही हमारे स्वास्थ्य और जीवन के लिए संकट बन जाए, तब उस पर गंभीर पुनर्विचार आवश्यक हो जाता है। दीपावली पर पटाखों की परंपरा समाज में गहराई तक पैठ चुकी है। लोग इसे परंपरा, रौनक और आनंद का प्रतीक मानते हैं। अक्सर यह तर्क दिया जाता है कि ‘बिना पटाखों के त्योहार अधूरा लगता है।’ लेकिन यह सोच आज के समय में बेहद खतरनाक साबित हो रही है। त्योहार की असली रौनक दीपों की जगमगाहट, परिवार की एकजुटता, सांस्कृतिक कार्यक्रमों और सामूहिक उत्सवों में है। संगीत, नाटक, कला और पारंपरिक दीपक किसी भी पटाखे से कहीं अधिक स्थायी आनंद दे सकते हैं।

समय आ गया है कि हम यह स्वीकार करें कि आतिशबाजी अब हमारी खुशियों का हिस्सा नहीं रह सकती। खुशियों का असली मतलब है एक-दूसरे के साथ का आनंद, स्वच्छ वातावरण में खुलकर सांस लेना और समाज में शांति और प्रेम का संचार करना। अगर हम चाहते हैं कि हमारी अगली पीढ़ी सुरक्षित और स्वस्थ जीवन जी सके, तो आतिशबाजी को त्यागना ही होगा। सरकारें अपनी नीतियों से इस दिशा में पहल कर चुकी हैं, अदालत ने भी कठोर आदेश दिए हैं, अब बारी समाज की है कि वह अपनी सोच बदले और अपने त्योहारों को पटाखों के बिना भी और अधिक रोशन और सार्थक बनाए। एक नागरिक के तौर पर हमारी जिम्मेदारी व संवेदनशीलता ही हमें इस संकट से उबार सकता है। विगत में सख्त कानून लागू करने के बावजूद नागरिकों के गैर-जिम्मेदार व्यवहार से प्रदूषण का संकट बढ़ा ही है। जब हम प्रकृति को नुकसान पहुंचाए बिना त्योहार मनाएंगे, तभी सच्चे अर्थों में हमारे उत्सव जीवनदायी और सार्थक बनेंगे। यही समय है कि हम सामूहिक रूप से एक नई परंपरा गढ़ें, आतिशबाजी रहित त्योहारों की परंपरा, ताकि आने वाली पीढ़ियां हमें दोष न दें कि हमने उनके हिस्से की स्वच्छ हवा और सुरक्षित पर्यावरण छीन लिया।

बिहार में महागठबंधन में पढ़ सकती है दरार, कई है कारण

अशोक भाटिया

बिहार विधानसभा चुनाव 2025 के लिए महागठबंधन में आर जे डी और कांग्रेस के बीच सीट बंटवारे तथा मुख्यमंत्री पद के उम्मीदवार को लेकर खुली खुली टकराहट हो गई है। अक्टूबर-नवंबर में होने वाले 243 सीटों वाले चुनाव से ठीक पहले ये दरारें विपक्षी एकता पर सवाल खड़ी कर रही हैं, जबकि सत्ताधारी मजबूत स्थिति में है।

सबसे ताजा घटना औरंगाबाद जिले के कुटुंबा विधानसभा क्षेत्र में घटी, जहां बिहार कांग्रेस अध्यक्ष राजेश राम ने महागठबंधन के कार्यकताओं की बैठक बुलाई। लेकिन आर जे डी के ब्लॉक और जिला अध्यक्षों ने साथ ही पूर्व विधायक सुरेश पासवान ने बिना वजह बताए इसका बहिष्कार कर दिया। आर जे डी नेताओं ने सोमवार को पासवान के नेतृत्व में अपनी अलग रणनीति बैठक आयोजित की, जिसमें चुनावी योजनाओं पर चर्चा हुई। पासवान, जो 2005 में आर जे डी से कुटुंबा जीत चुके हैं और तत्कालीन आर जे डी सरकार में मंत्री रह चुके हैं, ने कार्यकताओं को एकजुट करने का प्रयास किया। यह घटना गठबंधन में बढ़ती असहमति को उजागर करती है।

वैसे तो विवाद के कई कारण है उनमें कई कारण है । पहला विवाद की जड़ सीएम पद के उम्मीदवार को लेकर है। पिछले सप्ताह ऐ आइ सी सी के बिहार प्रभारी कृष्णा अल्लावरू ने कहा कि इंडिया ब्लॉक का सीएम फेस बिहार की जनता तय करेगी। यह बयान आर जे डी को चुभ गया, जो तेजस्वी प्रसाद यादव को गठबंधन का चेहरा बनाने पर अड़ा है। तेजस्वी, विधानसभा में विपक्ष के नेता, खुद को सीएम दावेदार बताते हुए नीतीश कुमार को दुबला-पतलासी एम और दुबारासी एम कहकर आलोचना कर रहे हैं। राहुल गांधी और मल्लिकार्जुन खड़गे जैसे कांग्रेसी नेताओं के सामने भी वे ऐसा कह चुके हैं।इस पर तेजस्वी ने 13 सितंबर को मुजफ्फरपुर के कांटी में रैली में कहा, इस बार तेजस्वी 243 सीटों पर चुनाव लड़ेगा। कांटी, मुजफ्फरपुर, गायघाट–हर जगह से। सबको अपील है कि तेजस्वी को वोट दो, बिहार को आगे ले जाएंगे। उन्होंने जोर देकर कहा, हम लौटेंगे। याद रखो, तेजस्वी सभी 243 सीटों पर मैदान में होगा। राजनीतिक विश्लेषक इसे गठबंधन पर दबाव बनाने और आर जे डी आधार मजबूत करने की रणनीति मानते हैं। कांग्रेस की ओर से एन एस यू आइ प्रभारी और युवा चेहरा कन्हैया कुमार ने 9 सितंबर को पटना में मीडिया सम्मेलन में कहा, हमें 70 सीटों तक क्यों सीमित कर रहे हो? हम सभी 243 सीटों पर लड़ेंगे। उन्होंने स्पष्ट किया कि उम्मीदवार का फैसला पार्टी लेगी, लेकिन गठबंधन सभी सीटों पर लड़ेगा। यह बयान सीट बंटवारे पर कांग्रेस की मांग को दशार्ता है, जो 2020 की तरह 60-70 या इससे अधिक सीटें चाहती है।

विवाद की जड़ें राहुल गांधी की वोटर अधिकार यात्रा से भी जुड़ी हैं, जहां आर जे डी को किनारे लगने का अहसास हुआ। कांग्रेस अब दूसरा वायदा निभाने को तैयार नहीं। सूत्रों के अनुसार, अगर सीटें कम मिलीं तो डिप्टी सीएम पद की मांग कर रही है, जो विकासशील इंसान पार्टी के मुकेश साहनी भी दोहरा रहे हैं। अन्य सहयोगी भी चुनौती दे रहे हैं। सी पी आइ त्र एम- एल)लिबरेशन ने 2020 में 19 सीटों पर 12 जीतीं, अब 40-45 चाहती है। झारखंड मुक्ति मोर्चा और पशुपति कुमार पारस की राष्ट्रीय लोक जनशक्ति पार्टी आर जे डी से बातचीत में हैं। ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन जो पिछले चुनाव में 5 सीटें जीती, गठबंधन में शामिल होने की कोशिश कर रही है। 6 सितंबर को तेजस्वी के आवास पर हुई बैठक में आर एल जे पी औरजे एम एल को इंडिया ब्लॉक में शामिल करने पर सहमति बनी, लेकिन आर जे डी -कांग्रेस को कम सीटें मिलेंगी। 2020 में महागठबंधन को कुल 110 सीटें मिलीं (आर जे डी -75, कांग्रेस-19), जबकि एन डी ए को 125। अब नए सहयोगियों से फ्रैगमेंटेशन बढ़ा है।

इससे पहले, महागठबंधन में दरार की अटकलें तब और तेज हो गईं जब कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने एक दिन पहले वामपंथी दलों (लेफ्ट) की तुलना राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) से कर दी थी। इसपर माकपा नेता ने तीखी प्रतिक्रिया दी है।माकपा महासचिव एमए बेबी ने राहुल गांधी के बयान की निंदा की है। उन्होंने कहा है कि यह बेकार बयान था और ऐसा नहीं करना चाहिए था। माकपा महासचिव ने कहा कि वे अक्सर विभिन्न मुद्दों पर कांग्रेस पार्टी की आलोचना करते हैं, लेकिन कभी भी उनकी तुलना भाजपा से नहीं की।उन्होने कहा कि राहुल गांधी ने आरएसएस और माकपा की तुलना की। यह बयान सही नहीं था और विपक्ष के नेता को इससे बचना चाहिए। दरअसल, राहुल गांधी ने शुक्रवार को आरएसएस और माकपा के बारे में कहा था कि दोनों ही सहानुभूति को नहीं समझते। उन्होंने केरल के पुथुपल्ली में केरल के पूर्व मुख्यमंत्री ओमन चांडी को श्रद्धांजलि देते हुए यह बात कही।कांग्रेस के दो बार मुख्यमंत्री रहे ओमन चांडी की दूसरी पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि के दौरान राहुल भाषण दे रहे थे। इस दौरान, उन्होंने प्रदेश में सत्तारूढ़ माकपा और आरएसएस पर निशाना साधते हुए कहा कि नेताओं को जनता की कोई परवाह नहीं है। हालांकि, राहुल के बयान पर वामपंथी नेताओं ने तुरंत निंदा नहीं की।बाद में पत्रकार से राज्यसभा सांसद बने जॉन ब्रिटास ने सोशल मीडिया पर तीखा हमला बोला। ब्रिटास ने लिखा कि कांग्रेस राहुल गांधी को राजनीतिक रूप से नासमझ बनाए रखने पर तुली हुई है।ब्रिटास ने उन्होंने यह भी कहा कि विडंबना यह है कि राहुल गांधी आरएसएस के बारे में जो कुछ भी जानते हैं, वह शायद हमारे दिवंगत नेता सीताराम येचुरी से आया है।

बताया जाता है कि 2025 की शुरूआत से ही राहुल गांधी के करीब करीब हर दौरे में एक बात कॉमन नजर आती है। आरजेडी के मुकाबले कांग्रेस को श्रेष्ठ बताना। जैसे लोकसभा चुनाव के दौरान राहुल गांधी क्षेत्रीय दलों की विचारधारा की बात करते थे। कहते थे, क्षेत्रीय दलों के पास कोई विचारधारा नहीं है। तब अखिलेश यादव निशाने पर थे, और अब तेजस्वी यादव हैं। अखिलेश यादव ने तब आंख भी दिखाई थी, शायद तेजस्वी यादव भी अब वैसा ही करने की कोशिश कर रहे हैं।चुनाव तो राहुल गांधी महागठबंधन के साथ ही लड़ने की करते हैं, लेकिन हर कदम पर लगता है जैसे कांग्रेस अकेले मैदान में उतरने जा रही हो। तेजस्वी यादव का बिहार की सभी 243 सीटों पर लड़ने की बात करना भी, राहुल गांधी के व्यवहार का जवाब ही लगती है। गौरतलब है कि बिहार में हुए रक्ष़ यानी विशेष गहन पुनरीक्षण के खिलाफ ही इंडिया ब्लॉक के बैनर तले वोटर अधिकार यात्रा निकाला जाना तय हुआ, लेकिन राहुल गांधी ने वोटर अधिकार यात्रा को भी भारत जोड़ो यात्रा और न्याय यात्रा जैसा बना देने की कोशिश की। फर्क बस यही था कि वोटर अधिकार यात्रा में राहुल गांधी के साथ तेजस्वी यादव और बिहार महागठबंधन के और भी नेता शामिल थे। फिर भी ऐसा लगा जैसे राहुल गांधी ने वोटर अधिकार यात्रा को हाइजैक कर लिया हो। पूरी यात्रा में राहुल गांधी आगे आगे और तेजस्वी यादव पीछे पीछे नजर आए। कहां प्रशांत किशोर जैसे नेता कांग्रेस को लालू परिवार की पिछलग्गू पार्टी कहा करते थे, और कहां वोटर अधिकार यात्रा में लगने लगा जैसे आरजेडी ही कांग्रेस की पिछलग्गू बन गई हो।

वैसे तेजस्वी यादव की तरफ से तो राहुल गांधी का नाम प्रधानमंत्री पद के लिए भी प्रस्तावित कर दिया गया, लेकिन राहुल गांधी पूरी तरह टाल गए। बल्कि, राहुल गांधी का जवाब सुनकर तो ऐसा लगा जैसे वो चाहते ही न हों कि तेजस्वी को बिहार में विपक्ष की तरफ से मुख्यमंत्री पद का चेहरा घोषित किया जाए। राहुल गांधी के बयान में जो कसर बाकी रह गई थी, कांग्रेस के बिहार प्रभारी कृष्णा अल्लावरु ने पूरी कर दी। अव्वल तो पहले भी कृष्णा अल्लावरु भी तेजस्वी यादव को सीएम फेस घोषित किए जाने पर वैसी ही प्रतिक्रिया देते थे जैसा राहुल गांधी का रिएक्शन था, लेकिन हाल के एक प्रेस कांफ्रेंस में तो चार कदम आगे ही बढ़ गए। कृष्णा अल्लावरु ने तो अब यहां तक बोल दिया है कि इंडिया ब्लॉक के मुख्यमंत्री पद का चेहरा अब बिहार के लोग ही तय करेंगे। निश्चित तौर पर तेजस्वी यादव और लालू यादव के लिए ऐसी बातें बर्दाश्त कर पाना काफी मुश्किल होगा। इसके बाद तेजस्वी यादव का बिहार अधिकार यात्रा शुरू करना जरूरी हो जाता है। और, सभी 243 सीटों पर चुनाव लड़ने की बात करना भी - तेजस्वी यादव के पास सीटों पर अपनी बात मनवाने का बेहतर तरीका भी यही लगता है।

सीट बटवारे का इतिहास देखा जाय तो 2020 के चुनाव में कांग्रेस को महागठबंधन में 70 सीटें मिली थीं, और चुनाव में कांग्रेस 19 सीटें जीतने में कामयाब हुई। उस चुनाव में आरजेडी ने 2015 में जीती हुई अपनी 10 सीटें सहयोगियों को दी थी, जिनमें दो कांग्रेस को मिली थीं - और वो एक सीट जीतने में सफल भी रही। 2020 के मुकाबले 2015 में कांग्रेस का स्ट्राइक रेट बेहतर पाया गया था। तब 41 सीटों पर चुनाव लड़कर कांग्रेस ने 27 सीटें जीती थी। लेकिन, 2020 में आरजेडी नेतृत्व को लगा कि महागठबंधन के सत्ता न हासिल करने में कांग्रेस अपने हिस्से की सीटें हार जाना बड़ी वजह रही। चुनाव नतीजे आने के बाद तेजस्वी यादव या लालू यादव तो नहीं, लेकिन आरजेडी नेताओं ने खुल कर राहुल गांधी और प्रियंका गांधी वाड्रा पर हमला बोला था।

अब 2025 के चुनाव में भी कांग्रेस की तरफ से 70 सीटों पर दावा पेश किए जाने की बात सुनी जा रही है। ऐसी दावेदारी के पीछे राहुल गांधी की वोटर अधिकार यात्रा से कांग्रेस अपने प्रभाव में हुआ इजाफा मान रही है। इंडियन एक्सप्रेस की रिपोर्ट के मुताबिक, कांग्रेस उन 70 सीटों में से 27 अपने लिए अच्छी सीटें मान रही है। 27 सीटों में ही कांग्रेस की जीती हुई 19 सीटें भी शामिल हैं। 8 वे सीटें हैं, जहां कांग्रेस उम्मीदवार दूसरे नंबर पर थे, और हार का फासला करीब पांच हजार वोट थे। दिल्ली की प्रेस कांफ्रेंस में कृष्णा अल्लावरु ने भी कहा था, हर राज्य में अच्छी और खराब सीटें होती हैं। और, ऐसा कभी नहीं होना चाहिए कि एक पार्टी सभी अच्छी सीटों पर चुनाव लड़े, और दूसरी खराब सीटों पर। कृष्णा अल्लावरु का कहना था कि सीटों के बंटवारे के वक्त इस मामले में बैलेंस रुख अख्तियार करना चाहिए।

जिस तरह तेजस्वी यादव ने खुले दिल से आने वाले चुनाव में राहुल गांधी को देश का प्रधानमंत्री बनाने की बात कही है, और राहुल गांधी ने उनके मुख्यमंत्री बनने में कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई है - तेजस्वी यादव को आंख दिखाने का मौका तो मिल ही गया है, और अब जो कुछ भी हो रहा है, उसी बात का सीधा असर है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सफल विदेश नीति, बढ़ता वैश्विक प्रभाव

संजीव ठाकुर

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत की विदेश नीति ने एक नई दिशा और ऊर्जा प्राप्त की है। आज भारत केवल दक्षिण एशिया तक सीमित नहीं, बल्कि वैश्विक मंच पर एक सशक्त और निर्णायक आवाज बनकर उभरा है। मोदी जी की सरकार ने पड़ोसी पहले की नीति से लेकर एक धरती, एक परिवार, एक भविष्य के विचार तक, विश्व को भारतीय दृष्टिकोण से जोड़ने का प्रयास किया है। जी20 शिखर सम्मेलन की सफल मेजबानी ने भारत की कूटनीतिक शक्ति और आयोजन क्षमता को सिद्ध किया। वहीं, अमेरिका, रूस, फ्रांस और जापान जैसे देशों के साथ रणनीतिक साझेदारी गहरी हुई है।

संयुक्त राष्ट्र में भारत की सक्रिय भूमिका, अंतरराष्ट्रीय मंचों पर आतंकवाद के खिलाफ सख़्त रुख और ऊर्जा सुरक्षा से लेकर तकनीकी सहयोग तक भारत की प्राथमिकताओं को स्पष्ट रूप से सामने रखती है। भारत की प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी आज केवल भारत के नहीं, बल्कि पूरी दुनिया के सबसे लोकप्रिय नेताओं में गिने जाते हैं। अनेक वैश्विक सर्वेक्षणों में उन्हें लगातार नंबर एक स्थान मिलना इस बात का प्रमाण है कि उनकी छवि सीमाओं से परे जाकर विश्वजन तक पहुँची है। मोदी की लोकप्रियता का रहस्य केवल उनकी सशक्त नीतियों में नहीं, बल्कि उनके जनझसंपर्क कौशल और सशक्त नेतृत्व में निहित है। अमेरिका से लेकर ऑस्ट्रेलिया और जापान से लेकर खाड़ी देशों तक, जहाँ भी मोदी जाते हैं, भारतीय प्रवासी ही नहीं, स्थानीय नागरिक भी उन्हें उत्साह से स्वागत करते हैं। विदेश नीति हमेशा चर्चा में रही है, लेकिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में इसकी दिशा और धारा बदल गई है। अब भारत केवल दूर का दर्शक नहीं, बल्कि निर्णायक भूमिका निभाने वाला देश बन गया है। यही वजह है कि मोदी सरकार की विदेश नीति को अक्सर बहु संतुलन (मल्टी एलाइनमेंट)कहा जाता है।

मोदी जी ने 2014 में शपथ लेते ही सभी शार्क देशों के प्रमुखों को आमंत्रित कर पड़ोस को प्राथमिकता दी थी और बहुत ही सौहाद्रता पूर्वक रिश्ता बनाने की पहल की थी। बांग्लादेश के साथ भूमि सीमा समझौता, नेपाल में राहत कार्य और श्रीलंकाझमालदीव से रिश्तों की मजबूती ने भारत की छवि को निखारा। 1947 में स्वतंत्रता के बाद से पाकिस्तान के साथ रिश्ते जरूर तनावपूर्ण रहे हैं, पाकिस्तान अपनी आतंकवादी गतिविधियों से बाज नहीं आने के कारण भारत के हमेशा निशाने पर रहा है और अनेक युद्ध हारने के बाद भी वह आतंकवादियों को लगातार वित्तीय पोषण कर रहा है लेकिन आतंकवाद के मुद्दे पर भारत ने उसे वैश्विक मंच पर अलग-थलग करने में सफलता पाई और संयुक्त राष्ट्र संघ के कई मंचों पर भारत ने पाकिस्तान को फटकार लगाई है इसके अलावा उसकी आतंकवादी गतिविधियों को पूरे विश्व के सामने उजागर भी कर दिया है।

मोदी की विदेश नीति का सबसे अहम पहलू यह है कि भारत ने हर ध्रुव से संबंध मजबूत किए।अमेरिका के साथ रणनीतिक साझेदारी और क्वाड रूस से ऊर्जा और हथियार सहयोग।यूरोप, खासकर फ्रांस के साथ रक्षा सहयोग यानी भारत ने संतुलन बनाए रखा और किसी एक खेमे पर निर्भर नहीं रहा। नाटो के देशों के राष्ट्र प्रमुखों से भारत के प्रधानमंत्री के रिश्ते काफी मजबूत एवं दोस्ताना है, इसराइल फ्रांस कनाडा ब्रिटेन इटली भारत को अपना सच्चा हितैषी और अभिन्न मित्र मानते हैं यह मोदी जी की कूटनीतिक बड़ी सफलता है।

चीन के साथ व्यापार तो बढ़ा, लेकिन डोकलाम और गलवान जैसी घटनाओं ने रिश्तों को कठिन बनाया। इसके जवाब में भारत ने क्वाड और इंडोझपैसिफिक रणनीति के जरिए चीन को संतुलित करने की कोशिश की।

2023 में दिल्ली में हुए जी20 शिखर सम्मेलन ने भारत की कूटनीति को नई ऊँचाई दी। अफ्रीकी संघ को जी20 का स्थायी सदस्य बनवाने में भारत की पहल को दुनिया भर में सराहा गया। यह संदेश साफ था कि भारत केवल अपने लिए नहीं, बल्कि विकासशील देशों के लिए भी नेतृत्व कर रहा है।अमेरिका में मैडिसन स्क्वायर गार्डन हाउडी मोदी जैसे कार्यक्रमों ने प्रवासी भारतीयों को गर्व का अहसास कराया। योग और आयुर्वेद को दुनिया भर में लोकप्रिय बनाना भारत की सांस्कृतिक ताकत को दशार्ता है।

भारत के सामने चुनौतियां अभी बाकी है भारत की विदेश नीति कई मायनों में सफल रही है। चीन में आयोजित शंघाई सहयोग संगठन की महत्वपूर्ण मीटिंग में भारत के प्रधानमंत्री मोदी जी ने चीन के राष्ट्रपति से जिनपिंग और रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के साथ जो गठबंधन किया है उससे विदेश नीति में एक नए युग का सूत्रपात हुआ है उससे यह तो स्पष्ट हो गया है कि भारत चीन और रूस यदि एक साथ हो जाए तो अमेरिका तथा नाटो देश इन्हें चुनौती नहीं दे सकते है। इसके बावजूद में भविष्य में चुनौतियाँ भी कम नहीं हैं चीन के साथ सीमा विवाद अभी भी है हालांकि इसका प्रभाव काफी कम हुआ है किंतु पाकिस्तान की जिद और अमेरिका को पाकिस्तान जैसे आतंकवादी देश को अपने पक्ष में करने से दक्षिण एशिया में तनाव की स्थिति पैदा हो सकती है। पड़ोसी देशों में चीन का बढ़ता प्रभाव भारत के लिए चिंता का कारण हैं। कुल मिलाकर, प्रधानमंत्री मोदी की विदेश नीति ने भारत की छवि को स्पष्ट एवं पारदर्शी बनाकर वैश्विक देशों को अपनी और आकर्षित किया है। अब भारत विश्व गुरु और आर्थिक सामरिक तथा वैज्ञानिक वैश्विक शक्ति दोनों के रूप में उभर रहा है। दुनिया का कोई भी बड़ा फैसला भारत की भागीदारी के बिना पूरा नहीं हो सकता है। यही मोदी जी की सरकार की विदेश नीति की सबसे बड़ी उपलब्धि है।

टिटहरीः प्रकृति की मौन चेतावनी

- डॉ सत्यवान सौरभ

जहाँ विज्ञान चूक जाता है, वहाँ टिटहरी पहले चेताती है

भारत का ग्रामीण जीवन सदियों से प्रकृति के साथ गहरे संवाद में रहा है। खेत, मौसम और जीव-जंतु मिलकर किसान की दिनचर्या और भविष्य दोनों को प्रभावित करते हैं। इन सबके बीच टिटहरी एक ऐसा छोटा-सा पक्षी है, जो सामान्य आँखों से मामूली दिखता है, लेकिन किसानों और लोकजीवन की स्मृतियों में यह मौसम की सटीक भविष्यवाणी करने वाला प्रहरी माना जाता है। यह केवल एक पक्षी नहीं, बल्कि धरती और आकाश के बीच संवाद का माध्यम है, एक मौन दूत है जो संकट और समृद्धि दोनों की आहट पहले ही दे देता है।

ग्रामीण अनुभव बताते हैं कि टिटहरी का व्यवहार मौसम और कृषि की दिशा तय करने में अहम संकेत देता है। यदि वह चार अंडे देती है तो चार महीने अच्छी वर्षा होने का विश्वास किया जाता है। जब वह ऊँचाई पर अंडे देती है, तो लोग मानते हैं कि सामान्य से अधिक वर्षा होगी। यदि कभी वह मजबूरी में छत या पेड़ पर अंडे दे, तो यह भीषण बाढ़ का संकेत माना जाता है। वहीं, यदि वह अंडे न दे तो यह सबसे डरावनी स्थिति होती है, क्योंकि लोग इसे अकाल का दूत मानते हैं। किसान कहते हैं कि जिस खेत में टिटहरी अंडे देती है, वह खेत खाली नहीं रहता। वहाँ फसल जरूर होती है। इस तरह यह पक्षी न केवल वर्षा और मौसम से जुड़े संकेत देता है बल्कि उपजाऊपन और अकाल जैसी चरम स्थितियों की चेतावनी भी बन जाता है।

लोकजीवन में एक और मान्यता है कि टिटहरी का मृत शरीर कुरुक्षेत्र के अलावा कहीं दिखाई नहीं देता। चाहे यह तथ्य हो या प्रतीकात्मक कल्पना, लेकिन यह विश्वास उसे जीवन और अस्तित्व की रक्षा का प्रतीक बना देता है। टिटहरी को देखने वाला किसान समझ जाता है कि यह पक्षी उसकी मिट्टी, फसल और भविष्य का पहरेदार है। यही कारण है कि ग्रामीण लोकगीतों और कहावतों में भी टिटहरी का उल्लेख मिलता है। यह उन जीवों में से है जिनकी गतिविधियों पर पीढ़ियाँ भरोसा करती रही हैं।

अब सवाल उठता है कि जब विज्ञान मौसम की भविष्यवाणी के लिए उपग्रह, राडार और कंप्यूटर मॉडल जैसे अत्याधुनिक साधन लेकर आया है, तब टिटहरी जैसे पक्षियों की भूमिका क्या रह जाती है। वास्तव में इसका उत्तर यही है कि विज्ञान और लोकअनुभव एक-दूसरे के पूरक हैं, विरोधी नहीं। वैज्ञानिक दृष्टि से देखा जाए तो टिटहरी जैसे पक्षी पर्यावरणीय परिवर्तनों के प्रति अत्यधिक संवेदनशील होते हैं। हवा की नमी, तापमान का उतार-चढ़ाव, भूमि की नमी, जल स्तर का बढ़ना या घटना झ इन सबका असर उनके व्यवहार पर पड़ता है। यही कारण है कि वैज्ञानिक भाषा में इन्हें इकोसिस्टम इंडिकेटर कहा जाता है। यानी ऐसे जीव जो अपने आचरण के माध्यम से हमें पर्यावरणीय बदलावों की समय रहते जानकारी दे देते हैं।

हमारे पूर्वजों ने विज्ञान के औजारों का सहारा लिए बिना ही इन संकेतों को अनुभव के आधार पर समझा और उनका लाभ उठाया। सदियों से किसान टिटहरी की गतिविधियों पर नजर रखते आए हैं। अगर वह अंडे देने का समय टाल दे तो किसान पहले से ही सतर्क हो जाते थे। यदि वह जमीन छोड़कर ऊँचाई पर चली जाए, तो वे अधिक वर्षा और संभावित जलभराव को लेकर चौकन्ने हो जाते थे। इस प्रकार लोकानुभव ने जो बातें कही हैं, वे वास्तव में वैज्ञानिक कारणों से जुड़ी हुई हैं। फर्क सिर्फ इतना है कि किसानों ने इन्हें अपनी भाषा और प्रतीकों में व्यक्त किया।

आज जब हम शहरीकरण और औद्योगिकीकरण की चमक में डूबे हैं, तब सबसे बड़ा संकट यही है कि हमने प्रकृति की इस मौन भाषा को सुनना लगभग छोड़ दिया है। शहरों में रहने वाला इंसान यह नहीं जानता कि कब कोई पक्षी अपनी आदत बदल रहा है, कब उसकी संख्या घट रही है या कब उसका स्वर बदल रहा है। यही लापरवाही हमें अचानक आने वाली आपदाओं के सामने असहाय बना देती है। यदि हम टिटहरी और अन्य पक्षियों के संदेशों को गंभीरता से लें तो आपदा प्रबंधन की हमारी क्षमता कई गुना बढ़ सकती है।

टिटहरी के बारे में यह भी कहा जाता है कि यह पक्षी खेत को कभी खाली नहीं छोड़ता। उसका वहाँ अंडे देना किसानों के लिए आश्वासन का प्रतीक है। यह विश्वास अपने आप में गहरा संदेश है कि प्रकृति मनुष्य को निराश नहीं करती, बशर्ते हम उसका सम्मान करें। लेकिन जब हम प्रकृति के नियम तोड़ते हैं, उसके साथ छेड़छाड़ करते हैं, तब उसके प्रहरी पक्षी भी अपने संकेत बदलने को मजबूर हो जाते हैं। यही वजह है कि कई बार बाढ़ या अकाल जैसी स्थिति का पूवार्भास हमें टिटहरी के व्यवहार से पहले ही मिल जाता है।

इस पक्षी का महत्व केवल ग्रामीण जीवन तक सीमित नहीं है। यह हमें याद दिलाता है कि जीवन का हर रूप पर्यावरण के विशाल ताने-बाने से जुड़ा है। जब एक छोटा-सा पक्षी अपने अंडों के जरिए भविष्य की तस्वीर दिखा सकता है, तब यह हमारे लिए चेतावनी भी है कि हम इस तंत्र के साथ खिलवाड़ न करें। विज्ञान भी यही कहता है कि पर्यावरण में सूक्ष्मतम बदलाव का सबसे पहले असर पक्षियों और छोटे जीवों पर दिखाई देता है। यदि हम समय रहते उन्हें सुन लें, तो बड़ी त्रासदियों से बच सकते हैं।

संपादकीय दृष्टि से यह कहना उचित है कि टिटहरी कोई साधारण पक्षी नहीं है। यह हमें यह समझाती है कि ज्ञान केवल प्रयोगशालाओं और उपग्रहों से नहीं आता, बल्कि खेत-खलिहानों और जीव-जंतुओं के आचरण से भी आता है। आधुनिक विज्ञान जहाँ आँकड़ों और तकनीक पर आधारित है, वहीं टिटहरी सहज संवेदना और प्राकृतिक जुड़ाव पर आधारित चेतावनी देती है। दोनों के बीच पुल बनाना ही आज की सबसे बड़ी जरूरत है।

आज की स्थिति में सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न संरक्षण का है। यदि टिटहरी जैसे पक्षी हमारे बीच से लुप्त हो जाएँगे तो न केवल लोकविश्वास टूट जाएगा, बल्कि पर्यावरणीय चेतावनी प्रणाली का एक अहम हिस्सा भी खो जाएगा। इसके संरक्षण के लिए हमें खेतों में अत्यधिक कीटनाशकों का उपयोग कम करना होगा, प्राकृतिक आवासों को सुरक्षित रखना होगा और जलस्रोतों को बचाना होगा। यह केवल एक पक्षी का संरक्षण नहीं होगा, बल्कि अपने भविष्य और अस्तित्व की रक्षा भी होगी। निष्कर्ष यही है कि जहाँ विज्ञान आँकड़ों और मशीनों पर भरोसा करता है, वहीं टिटहरी जैसी पक्षियाँ सहज चेतावनी देती हैं। विज्ञान देर से अलर्ट करता है, लेकिन टिटहरी पहले से सावधान कर देती है। हमारे लिए सबसे बड़ी चुनौती यही है कि हम इस मौन संवाद को सुनें और उसके अनुसार कदम उठाएँ। यदि हमने इस आवाज को नजरअंदाज किया, तो आने वाले समय में न केवल टिटहरी गायब हो जाएगी, बल्कि उसका दिया हुआ संदेश भी हमारे जीवन से खो जाएगा।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के जन्मदिन पर तेरापंथ युवक परिषद भिवंडी द्वारा रक्तदान शिविर का आयोजन

भिवंडी (उत्तरशक्ति)। भिवंडी के अंजूरफाटा क्षेत्र स्थित शत्रुंजय हाइट बिल्डिंग में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 75 वें जन्मदिन के अवसर पर तेरापंथ युवक परिषद भिवंडी द्वारा महा रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया जहां 112 यूनिट रक्त रक्तदान दाताओं द्वारा दिया गया । बतादें कि अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद भिवंडी द्वारा पिछले 17 वर्षों से रक्तदान शिविर का आयोजन करते आ रहे हैं वहीं नरेन्द्र मोदी के जन्मदिन पर यह दूसरा साल है । रक्तदान शिविर का उद्घाटन श्रीमती सायर देवी, वर्षा झावक, रिंकी पुनीत झावक, पवन झावक (जैन) के हाथों किया गया । बतादें कि तेरापंथ युवक परिषद सदैव से लोकहित कार्यों में अग्रणी भूमिका निभाता रहा है इसी तरह पधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के जन्मदिन पर रक्तदान अमृत महोत्सव 2.0 का आयोजन किया । इस कार्यक्रम में आये हुये अतिथियों को सम्मानचिन्ह पुष्पगुच्छ देकर स्वागत किया । इस अवसर पर तेरापंथ सभा के अध्यक्ष कमलेश बाफना, मंत्री मनीष कोठारी, महिला मंडल अध्यक्ष मंजु राठौड़, मंत्री महिमा बोथरा आदि सहयोगियों का आभार तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष भरत सिरोहिया ने किया। वही मंत्री लोकेश छल्लाणी ने आये हुये अतिथियों का स्वागत किया । इस अवसर पर विमल आंचलिया, कुलदीप चोरड़िया, अमर नाहर, प्रकाश बाफना, शांति लाल राठौड़, रविन्द्र वैद्य, पंकज सुराणा ,राहुल डागा, प्रकाश चपलोत,जेटीएन प्रभारी राकेश जी चपलोत, तरुण डागा, सीमा मुकेश बाफना, सीमा कमलेश बाफना, प्रभा आंचलिया, ममता चौपड़ा, दीपिका समदड़िया, रेणुका डागा, शर्मिला बाफना आदि समाज के लोग कार्यक्रम में उपस्थित थे।

बोईसर में उत्साहपूर्वक मनाया गया प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का जन्मदिन

पालघर(उत्तरशक्ति)। जिले के बोईसर शहर अंतर्गत धर्मनगरी आजाद नगर स्थित काशी विश्वनाथ एवं शीतला माता मंदिर परिसर में बुधवार, 17 सितंबर 2025 को केवट सामाजिक सेवा फाउंडेशन की ओर से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का जन्मदिन धूमधाम से मनाया गया। इस कार्यक्रम का नेतृत्व फाउंडेशन के संस्थापक अध्यक्ष तुलसीराम केवट ने किया। कार्यक्रम की शुरूआत केक काट कर की गई। इस मौके पर उपस्थित लोगों ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को विश्व के सबसे सफल प्रधानमंत्री बताते हुए कहा कि उनके नेतृत्व में भारत ने वैश्विक स्तर पर नई पहचान बनाई है और देश का गौरव बढ़ा है। कार्यक्रम में विशेष अतिथि के रूप में डॉक्टर भानुशाली उपस्थित रहे। साथ ही आनंद परडवाल, सुमित ठाकुर, कुंदन ओझा, धर्मेंद्र शाह, सुनील लांडे, विनय पांडे, जगदंबा मिश्रा, संतोष साहनी, राजू तिवारी, दूधनाथ शाह, सोनू जहांगीर, राजू सिंह, आनंद सिंह, जे.पी. चौहान, संजय मास्टर, मोहन सिनलकर, बजरंग राय, राकेश राय, संजय बावरे सहित अनेक गणमान्य लोगों ने कार्यक्रम में भाग लेकर प्रधानमंत्री को शुभकामनाएं देते हुए उनके दीर्घायु होने की कामना की।

न्यूमेरोस मोटर्स ने इलेक्ट्रिक स्कूटर डिप्लोस मैक्स+ का अनावरण किया

मुंबई। देश में इलेक्ट्रिक वाहन निर्माण क्षेत्र में विशेष पहचान बनाने वाली नई पीढ़ी की मूल उपकरण निमार्ता (ओईएम) कंपनी न्यूमेरोस मोटर्स ने आज अपनी बहुउपयोगी इलेक्ट्रिक स्कूटर डिप्लोस मैक्स का उन्नत संस्करण डिप्लोस मैक्स+ का अनावरण किया। स्वच्छ और टिकाऊ परिवहन की नई परिभाषा गढ़ने के उद्देश्य से तैयार किए गए इस मॉडल से कंपनी के डिप्लोस प्लेटफॉर्म के अंतर्गत व्यक्तिगत यातायात क्षेत्र में किए गए प्रयासों को और मजबूती मिलेगी। डिप्लोस मैक्स+ में कुल पाँच बड़े बदलाव किए गए हैं। यह स्कूटर आकर्षक नए डिजाइन और दोहरे रंग संयोजन में उपलब्ध होगी। इसमें 4.0 किलोवाट-घंटा क्षमता की डुअल लिक्विड इमर्शन सिस्टम पर आधारित बैटरी लगाई गई है। इस तकनीक के कारण स्कूटर की अधिकतम गति 70 किलोमीटर प्रतिघंटा तक पहुँच गई है, वहीं प्रमाणित (आईडीसी) स्थितियों में यह एक बार चार्ज होने पर 156 किलोमीटर तक चल सकती है। इसमें तेज पिकअप की भी सुविधा है। ब्लेज रेड, पियानो ब्लैक और वोल्ट ब्लू इन तीन रंगों में यह स्कूटर उपलब्ध है। सुरक्षा, भरोसेमंदी और टिकाऊपन का संतुलित मेल इस वाहन में मौजूद है, जिससे यह ग्राहकों की विविध आवश्यकताओं के लिए उपयुक्त विकल्प बनता है। डिप्लोस मैक्स+ की मुंबई में कीमत एक्स शोरूम 1,15,993 रुपयें तय की गई है।

सर्जरी के बाद जानलेवा जटिलताओं से जूझ रहे मरीज को मिली नई जिंदगी

मुंबई। जसलोक अस्पताल एवं रीसर्च सेंटर ने 49 वर्षीय महिला, श्रीमती रेखा मेहता (बदला हुआ नाम) का सफलतापूर्वक इलाज किया है, जिन्हें बेरियाट्रिक सर्जरी के बाद गंभीर और जानलेवा जटिलताएँ हुई थीं। उन्हें बेहद गंभीर हालत में भर्ती कराया गया था और जसलोक की सुपर-मल्टी-स्पेशलिटी टीम ने समय पर और समन्वित निर्णयों के साथ उनके मामले का प्रबंधन किया।

फरवरी 2025 में, मरीज ने अहमदाबाद में बेरियाट्रिक सर्जरी करवाई। तीन महीने बाद, उन्हें गंभीर जटिलताएँ हुईं और उन्हें आपातकालीन उपचार के लिए नवी मुंबई के दो अलग-अलग अस्पतालों में भर्ती कराया गया, जहाँ गैस्ट्रो-जेजुनोस्टॉमी अल्सर (पेट और छोटी आंत के बीच एक छेद) के लिए उनकी आपातकालीन लैपरोटॉमी (पेट को खोलने और उसकी जाँच करने के लिए पेट की सर्जरी) की गई। उसकी हालत और बिगड़ती गई और एक्यूट रीनल फेल्योर (अचानक किडनी फेल होना) और दिल का दौरा पड़ने से उसकी हालत और भी जटिल हो गई।

अवैध निर्माण के माप के दौरान हंगामा, महिला पुलिसकर्मी पर हमला

तीन लोगों के खिलाफ मामला दर्ज

कल्याण (उत्तरशक्ति)। कल्याण-डोंबिवली महानगर पालिका के अनधिकृत बांधकाम नियंत्रण विभाग की टीम पुराने जमीनी विवाद को लेकर मंगलवार को कोळसेवाडी क्षेत्र स्थित ओम सीता निवास इमारत में माप लेने पहुंची। इस दौरान विवाद इतना बढ़ा कि महिला पुलिसकर्मी पर हमला कर दिया गया और कई अधिकारियों को गाली-गलौज व धक्कामुक्की का सामना करना पड़ा। इस पूरे मामले में तीन लोगों पर मुकदमा दर्ज किया गया है।

जानकारी के अनुसार, 2022 में सुशीलकुमार दुबे ने अपने घर की बालकनी में विवेक सांगले द्वारा किए गए अवैध निर्माण की शिकायत पालिका में किया था। इसी मामले की सुनवाई और जांच के लिए 16 सितंबर को मनपा उपआयुक्त समीर भुमकर, सहायक आयुक्त तुषार सोनवणे व सचिन तामखेडे सहित अतिक्रमण विभाग, नगररचना विभाग और कर विभाग के अधिकारी तथा पुलिसकर्मी मौके पर पहुंचे। माप प्रक्रिया के दौरान सुशीलकुमार दुबे और उनके परिवार ने अपने फ्लैट का माप लेने से इंकार कर दिया और हंगामा शुरू कर दिया।

बताया गया कि इस दौरान सुशीलकुमार दुबे, उनकी पत्नी मंजू दुबे और बेटी नेहा दुबे ने न सिर्फ अधिकारियों से बहस की, बल्कि महिला पुलिसकर्मी माधुरी भगत (डोंगरे) को हाथ के अंगूठे पर काटकर घायल कर दिया। इसके अलावा कई महिला पुलिसकर्मियों के साथ रुपाली द्वारा गाली-गलौज और धक्कामुक्की की गई। घायल महिला पुलिसकर्मी को इलाज के लिए अस्पताल भेजा गया। इस घटना के बाद कोलसेवाडी पुलिस स्टेशन ने मनपा अधिकारी राजेश शिंत्रे की शिकायत पर सुशीलकुमार दुबे, मंजू दुबे और नेहा दुबे के खिलाफ सरकारी कामकाज में बाधा डालने, मारपीट और महिला पुलिसकर्मी पर हमला करने का मामला दर्ज किया गया है।

प्रधानमंत्री के जन्मदिन पर शहीद पुलिस कर्मियों की वीर पत्नियों का सम्मान

मुंबई (उत्तरशक्ति)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 75 वें जन्मदिन को सेवा और संस्कार से यादगार बनाने हेतु लोढ़ा फाउंडेशन की चेयरपर्सन डॉ मंजू लोढ़ा तथा मुलानी ट्रस्ट के हीराभाई मुलानी ने शहीद पुलिस कर्मियों की वीर पत्नियों तथा समाज में नितांत अकेली रहने वाली वृद्धाओं का सम्मान किया।

इस कार्यक्रम में मालती जैन, इंदिरा खिंवसरा, अनुजा जैन, छवि जैन, तथा लोढ़ा फाउंडेशन के कर्मचारियों ने अपना अमूल्य सहयोग दिया। यह कार्यक्रम लोढ़ा फाउंडेशन द्वारा संचालित स्कूल शारदा मंदिर के प्रांगण में आयोजित किया गया। डॉ मंजू लोढ़ा ने बताया कि यह छोटी-सी पहल सम्मान, कृतज्ञता और सहयोग का प्रतीक बनी, और समाजहित में साथ खड़े रहने की प्रतिबद्धता को सशक्त किया।

हिंदी भाषा प्रतिस्पर्धा का प्रतीक नहीं: डॉ.जेपी शुक्ला

जीआरसी स्कूल में मनाया गया हिंदी दिवस

कल्याण (उत्तरशक्ति)। कल्याण के पिसवली में स्थित समाज उद्धार समिति द्वारा संचालित जीआरसी हिंदी हाई स्कूल में हिंदी दिवस मनाया गया। देश में 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया जाता है। इस उपलक्ष्य में जीआरसी विद्यालय में 14 से लेकर 18 सितंबर तक विभिन्न कार्यक्रम किए गए। अंग्रेजी भाषा के बढ़ते चलन के बीच छात्र-छात्राओं ने नाटक, गीत-संगीत पेश कर हिंदी भाषा को बढ़ावा देने का प्रयास किया। इस मौके पर वरिष्ठ अधिवक्ता जैनेंद्र चौबे, अधिवक्ता हरीश नायर, समाज उद्धार समिति के संचालक बबन चौबे, मुख्याध्यापिका पुष्पा शुक्ला, मौजूद रहे। हिंदी भाषा को लेकर विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत नाटक देखकर मान्यवरों ने उनकी काफी सराहना की। वहीं इस कार्यक्रम को सफल बनाने में टीचर वर्षा पाटिल, करण पाल, जयश्री ठाकुर, अदिति भोईर, नीतू सिंह, सीमा पाठक प्रवीण तिवारी, उज्वला महाजन आदि शिक्षक-शिक्षिकाओं ने महत्वपूर्ण योगदान दिया।

स्वस्थ नारी सशक्त परिवार अभियान की पालघर में हुई शुरूआत

पालघर (उत्तरशक्ति)। महिलाओं के स्वास्थ्य और पोषण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से केंद्र सरकार द्वारा पूरे देश में 17 सितम्बर से 2 अक्टूबर 2025 तक स्वस्थ नारी सशक्त परिवार अभियान आयोजित किया जा रहा है। इसी अभियान का शुभारंभ बुधवार 17 सितम्बर को पालघर के ग्रामीण अस्पताल में किया गया ।

इस अवसर पर सांसद डॉ. हेमंत सवरा, विधायक राजेंद्र गावित, मुख्य कार्यकारी अधिकारी मनोज रानडे तथा पूर्व जिला परिषद अध्यक्ष प्रकाश निकम प्रमुख अतिथि के तौर पर उपस्थित थे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की प्रेरणा से शुरू यह अभियान सेवा ही संकल्प, राष्ट्र प्रगति ही प्रेरणा की भावना पर आधारित है। अभियान के अंतर्गत महिलाओं के लिए रक्तचाप, मधुमेह, स्तन एवं गर्भाशय ग्रीवा कैंसर, एचआईवी, क्षयरोग, सिकल सेल, दंत स्वास्थ्य सहित कई जांचें निःशुल्क उपलब्ध कराई जाएंगी। इसके साथ ही आंगनवाड़ी स्तर पर पूरक आहार पाककला प्रदर्शन, पोषण शपथ, स्थानीय आहार का प्रसार, एनीमिया जागरूकता, योग एवं मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम भी आयोजित होंगे। सांसद डॉ. हेमंत सवरा ने कहा कि महिलाओं का स्वास्थ्य ही सशक्त परिवार और मजबूत समाज की नींव है। हर किसी को इस अभियान में सक्रिय भागीदारी करनी चाहिए। विधायक राजेंद्र गावित ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि ग्रामीण महिलाओं को मुफ्त स्वास्थ्य जांच और पोषण सेवाएं उपलब्ध कराना इस अभियान का सबसे बड़ा लाभ है, जो प्रत्येक घर तक पहुँचना चाहिए। मुख्य कार्यकारी अधिकारी मनोज रानडे ने अपील की स्वास्थ्य जांच, पोषण सेवाओं और योजनाओं का लाभ उठाना ही परिवार की असली संपत्ति है। प्रत्येक महिला और बच्चे को नजदीकी स्वास्थ्य केंद्र, आंगनवाड़ी या आयुष्मान केंद्र से संपर्क कर इस अभियान का लाभ अवश्य लेना चाहिए। इस मौके पर जिला शल्यचिकित्सक डॉ. रामदास मराड, जिला स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. संतोष चौधरी, जिला कार्यक्रम अधिकारी व्यंकटराव हुंडेकर, डॉ. उमेश दुम्पलवार, डॉ. दीप्ती गायकवाड़, आशा कार्यकर्ता, आंगनवाड़ी सेविका और स्वास्थ्य विभाग के अधिकारी एवं कर्मचारी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

विधायक विलास तरे के हाथों स्वच्छता ही सेवा अभियान का जिलास्तरीय शुभारंभ

पालघर (उत्तरशक्ति)। 15 सितंबर को ग्रामपंचायत चहाडे (ता. पालघर) में मुख्यमंत्री समृद्ध पंचायतराज अभियान के राज्यस्तरीय शुभारंभ के उपलक्ष्य में ग्रामसभा आयोजित की गई। इस अवसर पर बोईसर विधानसभा के विधायक विलास तरे, जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी मनोज रानडे, उपमुख्य कार्यकारी अधिकारी (ग्राप) राजन पाटील, पालघर पंचायत समिती के सहायक गविअ बापुराव नाले, सरपंच विष्णु जाधव, ग्रामपंचायत अधिकारी, विभिन्न अधिकारी-कर्मचारी तथा बड़ी संख्या में ग्रामस्थ उपस्थित थे। इसी कार्यक्रम के अंतर्गत स्वच्छता ही सेवा 2025 अभियान का जिलास्तरीय शुभारंभ विधायक विलास तरे के हाथों संपन्न हुआ। इस अवसर पर विधायक तरे ने कहा कि यदि हमारा गांव स्वच्छ रहेगा तो जीवन भी स्वस्थ और सुखी होगा। साथ ही गांव की पहचान भी स्वच्छ गांव के रूप में बनेगी। महात्मा गांधी जयंती (2 अक्टूबर) के निमित्त स्वच्छ भारत मिशन अंतर्गत प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी स्वच्छता ही सेवा (एस एच एस) अभियान विशेष थीम स्वच्छोत्सव के रूप में मनाया जायेगा। यह अभियान 17 सितंबर से 2 अक्टूबर 2025 तक चलाया जायेगा और ग्रामपंचायतों को इसे प्रभावी रूप से लागू करने के निर्देश दिए गए हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छता बनाए रखने हेतु अभियान में सार्वजनिक उत्सव मंडल, महाविद्यालय, विद्यालय, एनएसएस-एनसीसी छात्र, सामाजिक व सेवाभावी संगठन, स्वच्छता सेवक, महिला बचत गट और शासकीय कार्यालयों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की जाएगी।जिला परिषद पालघर के मुख्य कार्यकारी अधिकारी मनोज रानडे ने सभी से आह्वान किया कि स्वच्छता ही सेवा 2025 के तहत हर ग्रामपंचायत में दैनंदिन उपक्रमों की प्रभावी अमलदारी की जाए। अभियान को सफल बनाने के लिए जल जीवन मिशन के प्रकल्प संचालक अतुल पारसकर द्वारा विशेष नियोजन तैयार किया गया।

न्यूनतम वेतन सलाहकार समिति की पहली बैठक मुंबई में संपन्न

मुंबई (उत्तरशक्ति)। महाराष्ट्र सरकार की नवगठित न्यूनतम वेतन सलाहकार समिति की पहली बैठक आज मुंबई के बांद्रा स्थित कामगार भवन में संपन्न हुई। इस बैठक की अध्यक्षता समिति के अध्यक्ष गणेश ताठे ने की तथा मंडल सचिव अक्षय तुरेकर की विशेष उपस्थिती रही।

बता दें कि महाराष्ट्र सरकार ने 14 अगस्त 2025 को समिति का पुनर्गठन किया था। आगामी तीन वर्षों के लिए समिति में कुल 15 प्रतिनिधियों (श्रमिक, नियोक्ता तथा स्वतंत्र प्रतिनिधि) की नियुक्ति की गई है। नई समिति की इस पहली बैठक में सभी सदस्यों का स्वागत किया गया।

बैठक में 24 अनुसूचित उद्योगों की न्यूनतम वेतन अधिसूचनाओं का आकलन किया गया। साथ ही 42 उद्योगों के न्यूनतम वेतन मसौदे, जो शासन को प्रस्तुत किए गए हैं, उन पर भी विस्तार से चर्चा की गई। इनमें से श्रमिकों का सबसे अधिक शोषण हो रहे 10 उद्योगों के न्यूनतम वेतन का तत्काल पुनर्निर्धारण कर शासन को भेजने का निर्णय लिया गया। कानून के अनुसार हर पाँच वर्ष में उद्योगों के न्यूनतम वेतन का पुनर्निर्धारण होना आवश्यक है, परंतु कई उद्योगों में यह प्रक्रिया लंबित होने पर सभी सदस्यों ने गंभीर चिंता व्यक्त की। आगे से समिति की बैठक हर माह आयोजित कर लंबित वेतन निर्धारण शीघ्र पूर्ण करने का सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया। इस बैठक में श्रमिक प्रतिनिधि के रूप में बाळासाहेब भुजबळ (पुणे), संजय जोरले (छत्रपति संभाजीनगर), योगेश आवळे (मुंबई), माणिक पाटील (खामगाव) तथा एडवोकेट गणेश देशमुख (नवी मुंबई) उपस्थित रहे। नियोक्ता प्रतिनिधि के रूप में बाबासाहेब दरेकर (पुणे), संतोष देशमुख (खामगाव) तथा स्वतंत्र प्रतिनिधि के रूप में वीरेंद्र ठाकुर (मुंबई), सुबोध रवींद्र देऊळगावकर (नागपुर), बिपिन नगीनदास गांधी (खामगाव-अकोला) सहित अन्य मान्यवर उपस्थित रहे।

बैठक का आकलन कर अध्यक्ष गणेश ताठे ने समापन भाषण दिया। जबकि आभार प्रदर्शन श्रमिक नेता बाळासाहेब भुजबळ ने किया। आगामी बैठक नवरात्र उत्सव के बाद आयोजित करने का सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया।

बोईसर में मंगलागौर का हुआ भव्य आयोजन, वात्सल्य ग्रुप को मिला प्रोत्साहन पुरस्कार

पालघर(उत्तरशक्ति/अजीत सिंह)। सज-धजकर आइए... नृत्य करिए... फुगड़ी खेलिए! – परंपरा, रिश्तों और उल्लास का संगम लेकर लोकमत सखी मंच द्वारा आयोजित मंगलागौर स्पर्धा का भव्य आयोजन वंजारी समाज हॉल, नवापूर रोड, बोईसर (पश्चिम) में उत्साहपूर्वक संपन्न हुआ।

इस सांस्कृतिक कार्यक्रम में विभिन्न समूहों ने पारंपरिक परिधानों के साथ आधुनिक और लोकनृत्य का अनोखा संगम प्रस्तुत किया। इन प्रस्तुतियों ने पूरे वातावरण को उत्सवमय बना दिया। इसी क्रम में वात्सल्य ग्रुप को भी मंच पर मंगलागौर की प्रस्तुति देने का अवसर मिला। इस मौके को उन्होंने अपनी प्रतिभा व सुंदर प्रस्तुति के माध्यम से दर्शकों का मन जीत लिया। उनकी सृजनात्मकता और सांस्कृतिक प्रेम को देखते हुए उन्हें प्रोत्साहन पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस सफलता से समूह के सभी सदस्यों में अत्यंत आनंद और गर्व की भावना उत्पन्न हुई। वात्सल्य ग्रुप ने इसे अपनी एकजुटता, परंपरा के प्रति प्रेम और ईमानदार प्रयासों का परिणाम बताया। इस विशेष उपलब्धि पर सभी टीम सदस्यों को दिल से बधाई दी गई। कार्यक्रम में मेघना संपत वैराल का विशेष योगदान रहा। समूह ने बताया कि उनकी प्रेरणा, सहयोग और समर्थन के बिना यह सफलता संभव नहीं थी। वात्सल्य ग्रुप ने उनके प्रति हार्दिक आभार और धन्यवाद प्रकट किया। यह अविस्मरणीय क्षण सभी प्रतिभागियों के लिए प्रेरणादायी साबित हुआ और भविष्य के आयोजनों के लिए एक नई ऊर्जा प्रदान की।

हाजी अल्लाह दिया अंसारी फाउंडेशन द्वारा भिवंडी के पत्रकारों को एवार्ड देकर किया गया सम्मानित

भिवंडी (उत्तरशक्ति)। हाजी अल्लाह दिया अंसारी फाउंडेशन के तत्वावधान में कल्याण रोड स्थित मंगलमूर्ति शादी हॉल में एक भव्य कार्यक्रम आयोजन किया गया। बतादें कि कार्यक्रम के संयोजक जियाउल हसन अंसारी ने भिवंडी में पत्रकारिता से जुड़े 100 से अधिक पत्रकारों एवं समाजसेवकों को उनके द्वारा किये गये कार्यों को देखते हुये सम्मानचिन्ह देकर सम्मानित किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में प्रसिद्ध पत्रकार सईद हमीद, मुंबई उर्दू न्यूज के वरिष्ठ स्तंभकार और संरक्षक शकील रशीद आदि के साथ विशिष्ट अतिथियों में पूर्व विधायक रूपेश महात्रे, शिवसेना प्रमुख उल्हासनगर राजेंद्र चौधरी, भिवंडी राकांपा अध्यक्ष शोएब गुड्डू खान, जयराम दास प्रताप राय खत्री, फिल्म डायरेक्टर ईश्वर सिंह, अब्दुल्ला सईद, सुलैमान उस्मान मिठाईवाला, समाजसेवी फजलुर्रहमान अंसारी, इनआम अली अंसारी, मुंब्रा से भी कई पत्रकार और मीडिया प्रतिनिधि शामिल हुए। इस मौके पर भिवंडी के प्रिंट मीडिया प्रतिनिधियों को मौलाना अबुल कलाम आजाद एक्सीलेंस अवॉर्ड देकर सम्मानित किया गया। राष्ट्रीय चैनलों के पत्रकारों को (सर कुलदीप नायर एक्सीलेंस इन जर्नलिज्म अवॉर्ड) देकर सम्मानित किया गया। इसके साथ ही सोशल मिडिया के दर्जनो प्रितिनिधियों को सम्मानित किया गया। विशेष मेहमानों व विशेष अतिथियों को (ईगल ऑफ सोसाइटी अवॉर्ड) और भिवंडी के उभरते यूट्यूब चैनल पत्रकारों को (राइजिंग स्टार ऑफ जर्नलिज्म अवॉर्ड) से सम्मानित किया गया। वरिष्ठ पत्रकार सईद हमीद ने अपने सम्बोधन में कहा कि पत्रकार की कलम एक तलवार है, जिसका उपयोग नकारात्मक या सकारात्मक दोनों तरह से किया जा सकता है। पत्रकारों का फर्ज है कि वे इसका इस्तेमाल सकारात्मक रूप में करें। फाउंडेशन के अध्यक्ष और कार्यक्रम संयोजक जियाउल हसन अंसारी ने बताया कि संगठन पहले भी कई मौकों पर समाज की सेवा कर चुका है।

पटना के निवेशकों ने 2025 में बाजार की अस्थिरता के बीच टाटा फ्लेक्सी कैप में अपने निवेश को दोगुना किया

मुंबई/पटना। विदेशी फंडों के आउटफ्लो, कच्चे तेल की कीमतों में उतार-चढ़ाव, भू-राजनीतिक तनाव और असमान कॉर्पोरेट आय के कारण हाल के महीनों में बाजार में भारी उतार-चढ़ाव रहा है। ऐसे समय में, निवेशकों को ऐसी रणनीतियों की आवश्यकता होती है, जो विकास और स्थिरता के बीच संतुलन बनाए रखें। फ्लेक्सी कैप फंड और मल्टी एसेट एलोकेशन फंड अपने विविधीकरण और अनुकूलनशीलता की वजह से लोकप्रिय हो रहे हैं, जिससे निवेशकों को अनिश्चितता से निपटने में मदद मिल रही है।

टाटा एसेट मैनेजमेंट के फंड मैनेजर, अभिनव एच. शर्मा ने कहा, आज के बाजार में उतार-चढ़ाव, बदलते वैश्विक संकेतों और मूल्यांकन में क्षेत्रीय कमियों के कारण, ऐसी निवेश रणनीतियों की मांग करता है, जो लचीलेपन को विविधीकरण के साथ जोड़ती हों। फ्लेक्सी कैप फंड लार्ज, मिड और स्मॉल कैप में गतिशील आवंटन के जरिए यह सुविधा प्रदान करते हैं, जबकि मल्टी एसेट एलोकेशन फंड इक्विटी, फिक्स्ड इनकम, सोना और कमोडिटीज में निवेश फैलाकर लचीलापन बढ़ाने का प्रयास करते हैं।

उत्तरशक्ति

* संपादकः ओमप्रकाश प्रजापति
* उप संपादकः प्रेम चंद मिश्रा
*प्रबंध संपादकः डा. शेषधर बिन्द
उपरोक्त सभी पद अवैतनिक है।

पत्राचार कार्यालय:
उत्तरशक्ति (हिंदी दैनिक)
मुंबई-पूणे मोटर मालक श्रमजीवन प्रिमायसेस को.सो., बी-5, ए-337 ट्रक टर्मिनल डब्लू.टी.टी. रोड, आर.टी.ओ. जवल ऑटाफ हिल वडाला, मुंबई-37
मो.- 9554493941
email ID- uttarshaktinews@gmail.com

बहुप्रतीक्षित पुस्तक मोदीः द मास्टर प्रॉब्लम सॉल्वर का विमोचन

मुंबई (उत्तरशक्ति)। बहुप्रतीक्षित पुस्तक मोदीः द मास्टर प्रॉब्लम सॉल्वर का विमोचन कल प्रतिष्ठित किताब खाना, फोर्ट, मुंबई में हुआ। इस अवसर पर पाठकों, राजनीतिक चिंतकों और पुस्तक-प्रेमियों की विशिष्ट उपस्थिति रही।

कार्यक्रम में प्रमुख अतिथि के रूप में विधायक एवं मुंबई भाजपा अध्यक्ष एडवोकेट अमित साटम उपस्थित रहे, जिन्होंने लेखक ग्रीनस्टोन लोबो और डॉ. सतीश मोढ ने लोकप्रिय आरजे सलील आचार्य के साथ एक विचारोत्तेजक संवाद में भाग लिया, जिसमें पुस्तक के मुख्य विषयों और भारत की नेतृत्व यात्रा को समझने के उनके अनोखे दृष्टिकोण पर चर्चा हुई।मोदीः द मास्टर प्रॉब्लम सॉल्वर एक प्रश्न प्रस्तुत करती हैः क्या होगा भारत का भविष्य ? यह पुस्तक बताती है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारत की सबसे कठिन चुनौतियों का सामना केवल अपनी राजनीतिक सूझबूझ और दृढ़ इच्छाशक्ति से ही नहीं किया, बल्कि उस दुर्लभ ज्योतिष संयोग के सहारे भी किया जिसने उनके नेतृत्व पथ को आकार दिया। यह पुस्तक वैज्ञानिक ज्योतिष, नेतृत्व सिद्धांत, जीवनी और वित्तीय दृष्टिकोण का अनूठा मिश्रण है, जो पाठकों को 2025 से 2030 के बीच होने वाले व्यापक परिवर्तनों को समझने का मार्गदर्शन देती है। इसमें मोदी के पिछले निर्णयों के पीछे छिपी शक्तियों, आगे आने वाली चुनौतियों और उन ज्योतिष संकेतों को उजागर किया गया है जो भारत की वैश्विक मंच पर निरंतर उन्नति की ओर इशारा करते हैं। लेखकों ने जोर देकर कहा कि यह पुस्तक महज राजनीतिक या ज्योतिषीय विमर्श नहीं है, बल्कि उन सभी के लिए उपयोगी मार्गदर्शक है जो अस्थिर हालात में स्पष्टता, चुनौतियों में अवसर और भ्रमित समय में मार्गदर्शन चाहते हैं। सह-लेखक ग्रीनस्टोन लोबो ने कहा, यह पुस्तक केवल मोदी के बारे में नहीं है, बल्कि इस बारे में है कि हम सब भारत के भविष्य को गढ़ने वाली शक्तियों के साथ किस प्रकार तालमेल बिठा सकते हैं। सह-लेखक डॉ. सतीश मोढ ने जोड़ा, इस पुस्तक में ज्योतिष और नेतृत्व शिक्षाओं का समन्वय कर पाठकों को एक ठोस मार्गदर्शन दिया गया है, जिससे वे भविष्य की चुनौतियों का आत्मविश्वास के साथ सामना कर सकें।

स्वामीः शरद फागूराम प्रजापति, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक ओमप्रकाश रविंद्रनाथ प्रजापति द्वारा सोमानी प्रिंटिंग प्रेस, यूनिट क्रमांक 4, तल मजला, एन.के. इंडस्ट्रियल स्टेट, आरे रोड, प्रवासी इंडस्ट्रियल एस्टेट, जवल, गेट क्रमांक 2, गोरेगांव (पूर्व), मुंबई-400063, महाराष्ट्र से मुदित एवं के-4, रूम नं. 8, ग्राउंड फ्लोर न्यू समता सहकारी को.ऑ. हां. सोसाइटी, एमएमआरडीए कॉलोनी कंजूरमार्ग (वेस्ट), जिला मुंबई- 400078, महाराष्ट्र से प्रकाशित। RNI NO. MAHHIN/2018/76092 * **संपादक- ओमप्रकाश रविंद्रनाथ प्रजापति,** समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के लिए उत्तरदाई तथा इससे उत्पन्न समस्त विवाद मुंबई न्यायालय के अधीन होंगे।
पत्राचार कार्यालयः मुंबई-पूणे मोटर मालक श्रमजीवन प्रिमायसेस को.सो., बी-5 ए-337 ट्रैक टर्मिनल, डब्लू.टी.टी. रोड, आर.टी.ओ. जवल, ऑटाफ हिल, वडाला मुंबई -37, **मो.- 9554493941 email ID- uttarshaktinews@gmail.com**

आकाशीय बिजली का कहर, खेत में खाद डाल रहे सब्जी विक्रेता की मौत, परिजनों में मचा कोहराम

आफताब आलम

मानीकलां जौनपुर (उत्तरशक्ति)। खेतासराय थाना

अंतर्गत,ग्यासपुर नोनारी में गांव आकाशीय बिजली की चपेट में आने से एक व्यक्ति की मौत हो गई। दरअसल, बुधवार को अपने ही खेत में खाद डाल रहे थे कि। इसी दौरान आकाशीय बिजली की चपेट में आ गई आस पास खेत में काम कर रहे लोगो ने किसी तरफ एक निजी अस्पताल लेके गए जहां डॉक्टर ने मृत्यु घोषित कर दिया घटना की सूचना मिलते ही पुलिस की टीम मौके पर पहुंची और जांच शुरू कर दी है। शव का पंचनामा कर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। ग्यासपुर नोनारी निवासी बहादुर गौतम पुत्र स्वर्गीय रामदास (45) वर्ष बुधवार की दोपहर 12:30 बजे अपने ही खेत में खाद डाल रहे थे वह अपने खेत में अपने पुत्र के साथ काम कर रहे था। साथ ही आसपास के खेत में और भी लोग काम कर रहे थे। दोपहर को अचानक मौके पर आकाशीय बिजली ने कहर बरपाई और बहादुर के ऊपर ही आकाशीय बिजली गिर गई।

घटना की सूचना पुलिस को दी गई। स्थानीय पुलिस ने घटना स्थल पर पहुंच कर। उन्होंने पंचनामा कार्रवाई कर शव को पोस्टमार्टम के लिए भिजवाया। मौके पर बड़ी संख्या में लोग मौजूद रहे। फिलहाल पुलिस ने आगे की जांच कर रही ही है। वहीं परिजनों का रो रो कर बुरा हाल हो गया है।

शादी के 17 दिन बाद परिजनों को बेहोश कर प्रेमी के साथ दुल्हन हुई फुर्र, मुकदमा दर्ज

मुजफ्फरनगर(उत्तरशक्ति)। जनपद के खालापार क्षेत्र में एक चौंकाने वाला मामला सामने आया है, जहां निकाह के महज 17 दिन बाद ही नवविवाहिता दुल्हन अपने प्रेमी के साथ फरार हो गई। आरोप है कि जाते समय वह घर से तीस हजार रुपये नगद और लगभग चार लाख रुपये के सोने-चांदी के जेवर भी साथ ले गई। 17 दिन पहले निकाह करने वाली दुल्हन अपने परिजनों को बेहोश कर प्रेमी के साथ फुर्र हो गई। जाते समय वह घर से नगदी और जेवरात भी ले गई। नव-नवेली दुल्हन की इस करतूत से दोनों परिवारों में हड़कंप है। इस मामले में खालापार कोतवाली में प्रेमी और उसके परिजनों के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई गई है। खालापार क्षेत्र के जामियानगर निवासी जिकरया पुत्र स्व. उमर निवासी ने एफआईआर दर्ज कराई कि बेटी की शादी 26 अगस्त 2025 को रीति-रिवाज से की थी। बेटी अपने ससुराल चली गई थी। दो दिन पहले वो ससुराल से बहाना करके मायके आ गई। रात में अपने मायके से लगभग तीस हजार रुपये नगद व लगभग चार लाख रुपये के सोने व चांदी के जेवरात आदि लेकर कैफ व कैफ के भाई शाहबाज व शाद इलाही पुत्रगण दिलशाद व मैहरुनिसा पत्नि दिलशाद आदि के साथएक राय होकर साजिश करके पुत्री जिया नूर अपने मायके वालो को कैफ पुत्र दिलशाद के द्वारा दी गई नशे की गोलिया चाय / खाना आदि मे मिलाकर देने का बाद आरोपी कैफ के साथ कही चली गई। घटना की जानकारी देते हुये जिया नूर की माता राशिदा पत्नि जिकरया ने अपने पति को बताया कि कैफ आदि जिया नूर को बहला फुसलाकर अपहरण करके कही ले गये है। पुलिस को बताया कि निकाह से पहले बेटी का कैफ से प्रेम प्रसंग चल रहा था, जिसके चलते कैफ अपने परिजनो की मदद से उसा भगा ले गया है। खालापार कोतवाली पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर कार्यवाही शुरू कर दी है।

प्रभारी मंत्री ने चौकियां धाम व वन संरक्षक ने बसुही नदी के तटीय क्षेत्र में पौधरोपण कर सेवा पर्व का किया शुभारंभ

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। प्रभागीय वनाधिकारी प्रोमिला ने अवगत कराया है कि जौनपुर वन

प्रभाग के सदर रेंज के अन्तर्गत चौकियां धाम में मंत्री नगर विकास, शहरी समग्र विकास, नगरीय रोजगार एवं गरीबी उन्मूलन ऊर्जा एवं अतिरिक्त ऊर्जा स्रोत विभाग/प्रभारी मंत्री ए०के० शर्मा द्वारा मौलश्री का पौध रोपण कर सेवा पर्व का शुभारम्भ किया गयाा। इस अवसर पर प्रभारी मंत्री द्वारा पर्यावरण संरक्षण एवं हरियाली बढ़ाने हेतु जनमानस को आम एवं अन्य फलदार पौधों का वितरण भी किया गया। सांसद राज्य सभा श्रीमती सीमा द्विवेदी, विधायक शाहगंज रमेश सिंह, विधायक मडियाहूं डॉ० आर के पटेल, जिलाध्यक्ष पुष्पराज, नगर पालिका अध्यक्ष मनोरमा मौर्या, जिलाधिकारी डॉ० दिनेश चंद्र सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। इसके साथ ही सेवा पर्व के अवसर पर वाराणसी मण्डल के वन संरक्षक डा० रवि कुमार सिंह द्वारा मड़ियाहू रेंज के अन्तर्गत बसुही नदी के तटीय क्षेत्र में पीपल, बरगद, नीम के पौधों का त्रिवेणी वृक्षारोपण कर सेवा पर्व का शुभारम्भ किया गया। इसके अतिरिक्त क्षेत्रीय जनमानस व विभाग के समस्त अधिकारियों/ कर्मचारियों तथा विभागीय दैनिक श्रमिकों द्वारा विभिन्न प्रजाति के 500 पौधों का रोपण कर स्थानीय लोगों को पर्यावरण के प्रति जागरूक किया गया।

इस अवसर पर वन संरक्षक, आ० रवि कुमार सिंह ने सेवा पर्व के पीछे की मूल भवना पर प्रकाश डालते हुए विकसित भारत की संकल्पना, पर्यावरण के संरक्षण एवं संवर्धन के साथ-साथ स्वच्छता का अहवान किया। इस अवसर पर वे उपस्थित बच्चों एवं दैनिक श्रमिकों से संवाद भी किया। प्रभागीय वनाधिकारी, जौनपुर श्रीमती प्रोमिला के नेतृत्व में वन विभाग के समस्त क्षेत्रीय वन अधिकारी ने सेवा पर्व को बृहदस्तर पर मनाये जाने का संकल्प भी लिया।

दस नामजद समेत 70 वकीलों पर देर रात केस

वाराणसी(उत्तरशक्ति)। जनपद में हाल ही में घायल दरोगा की तहरीर पर कैंट थाने में रात करीब 12:45 बजे

दस नामजद और 60 अन्य अज्ञात पर केस दर्ज किया गया। इसमें अजीत मौर्या, मोहित मौर्या, अजीत वर्मा उर्फ राजा, राजन पांडेय, शेखर यादव, अजीत सिंह, सुमित सिंह, आलोक सौरभ, प्रकाश शंकर श्रीवास्तव और ईशान नामजद हैं। इसके अलावा 60 अज्ञात पर हत्या के प्रयास, गैरइरादतन हत्या के प्रयास, बलवा, गैरकानूनी तौर पर इकट्ठा होना, धारदार हथियार से वार, सरकारी कर्मचारी पर हमला, सरकारी काम में बाधा, डकैती, डकैती के लिए चोट पहुंचाना, 7 सीएलए एक्ट समेत अन्य धाराएं लगी हैं। आरोप है कि सभी ने लामबंद होकर लोक सेवक के कर्तव्य में बाधा डालते हुए खतरनाक हथियार से लैश होकर घेर कर गाली गलौज की। धमकी देते हुए जान से मारने की नियत से मारपीट कर मरणासन्न अवस्था में नाले में फेंक दिया। उसके पर्स से पहचान पत्र, पुलिस परिचय पत्र, 4200 रुपये छीन लिये और वर्दी फाड़ दी।

सशक्त नारी से ही स्वस्थ समाज का निमार्ण: अजय सिंह

स्वस्थ नारी, सशक्त परिवार अभियान का हुआ शुभारंभ

खेतासराय,जौनपुर (उत्तरशक्ति)। नगर के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र सोंधी में बुधवार स्वस्थ नारी, सशक्त परिवार अभियान का शुभारंभ किया गया। यह

अभियान 17 सितंबर से 2 अक्टूबर तक चलेगा। उद्घाटन ब्लॉक प्रमुख प्रतिनिधि अजय कुमार सिंह ने फीता काटकर किया। इस दौरान ब्लॉक प्रमुख प्रतिनिधि अजय कुमार सिंह ने कहा कि सशक्त नारी से ही स्वस्थ समाज और मजबूत राष्ट्र का निर्माण संभव है। इस अभियान का लाभ अधिक से अधिक महिलाओं तक पहुँचना चाहिए। कार्यक्रम में स्वास्थ्य विभाग व बाल विकास एवं पुष्टाहार विभाग द्वारा संयुक्त रूप से स्वास्थ्य मेले का आयोजन किया गया। इस दौरान प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र सोंधी पर जनरल फिजिशियन डॉ. विजय कुमार यादव, आथोर्पैडीक विशेषज्ञ डॉ. अबू फैसल, महिला चिकित्सक डॉ. फिरदौसिया खातून, आयुष चिकित्सक डॉ. फैजान अंसारी, डॉ. समरीन शैला, डॉ. फौजिया खातून, एवं डॉ. मोहम्मद साजिद की देख-रेख में महिलाओं व बच्चों का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया। टीकाकरण परामर्श विनीता मौर्य द्वारा दिया गया, वहीं गर्भवती महिलाओं की एएनसी जांच स्टाफ नर्स सरिता यादव और रीता भारती ने की। बाल विकास एवं पुष्टाहार विभाग की ओर से अन्नप्राशन व गोद-भराई कार्यक्रम का आयोजन किया गया तथा पोषणयुक्त व्यंजनों के स्टॉल के माध्यम से महिलाओं को जागरूक किया गया। प्रभारी चिकित्सा अधिकारी डॉ. सूर्य प्रकाश यादव ने बताया कि अभियान के दौरान समुदाय आधारित स्वास्थ्य सेवाएं सुचारू रूप से उपलब्ध कराई जाएंगी। आयुष्मान भारत योजना के अंतर्गत स्टॉल भी लगाया गया, जहाँ मकबूल वासिफ और अंकुर श्रीवास्तव ने लाभार्थियों के कार्ड बनाए। जाँच सेवाएं गुलाबचंद यादव व अंकिता विश्वकर्मा द्वारा दी गईं तथा दवाओं का वितरण फार्मासिस्ट अशोक कुमार यादव ने किया। कार्यक्रम में सहायक शोध अधिकारी विप्लव यादव, प्रतिरक्षण अधिकारी राहुल कुमार यादव, बीएमसी अवधेश कुमार तिवारी, बीपीएम सुजीत कुमार मौर्या, बीसीपीएम अशोक कुमार कुशवाहा, बाल विकास परियोजना की सुपरवाइजर अनीता राव, रजनीश कुमार सहित सैकड़ों लोग मौजूद रहे।

सशक्त नारी, स्वस्थ परिवार के तहत आयोजित स्वास्थ्य शिविर में 287 छात्राओं का हुआ स्वास्थ्य परीक्षण

मानीकलाँ,जौनपुर (उत्तरशक्ति)। खेतासराय क्षेत्र के कस्बा मानीकला स्थित डॉ. वकील नजीर इंटर कॉलेज में हबीब हॉस्पिटल की ओर से स्वस्थ नारी, सशक्त परिवार अभियान के अंतर्गत गुरुवार को निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ विद्यालय के संस्थापक-मैनेजर डॉ. वकील अहमद ने फीता काटकर किया। उन्होंने कहा कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का विकास होता है। स्वास्थ्य सबसे बड़ी पूंजी है, जिसे धरोहर की तरह संजोकर रखना चाहिए। नशे से दूर रहकर ही जीवन को सार्थक बनाया जा सकता है। शिविर में छात्राओं का स्वास्थ्य परीक्षण करते हुए स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. ईरम फिरदौश ने आवश्यक दवाएं वितरित कीं। उन्होंने छात्राओं को जागरूक करते हुए कहा कि किसी भी तरह की समस्या या बीमारी

छिपानी नहीं चाहिए, बल्कि तुरंत अभिभावकों को बताकर डॉक्टर से परामर्श लेना चाहिए। समय पर जांच और इलाज से समस्या को शुरूआती दौर में ही रोका जा सकता है। उन्होंने यह भी बताया कि सरकार महिला स्वास्थ्य को लेकर गंभीर है और 17 सितम्बर से 2 अक्टूबर तक चलने वाले सेवा पखवाड़ा के माध्यम से महिलाओं को विशेष लाभ मिल रहा है। छात्राओं को नियमित रूप से खून और स्वास्थ्य की जांच कराने की सलाह दी गई। कार्यक्रम का संचालन डॉ. अबु जैद डेंटल सर्जन ने किया। इस मौके पर कॉलेज के शिक्षकों और छात्राओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस अवसर पर हाफिजुल्लाह, मो० राफे शमीम नजीर, इस्मत शमीम, अर्चना सिंह, खुशबू बानो, आस्था कश्यप, नजमा बानो, अजवा नाज आदि लोगों ने सहयोग किया।

दरोगा प्रशांत सिंह बनाये गए एसओजी प्रभारी

शाहगंज कोतवाली के कस्बा इंचार्ज का हुआ तबादला

शाहगंज,जौनपुर(उत्तरशक्ति)। शाहगंज कोतवाली में कुछ ही महीने

तैनात एसआई प्रशांत कुमार सिंह ने कई बड़े बड़े मामलों का निस्तारण किया। जिसमें से सबसे प्रमुख एक भू माफिया को जेल की हवा खिलाना रहा और एक अन्य केस में जो करोड़ो की प्रॉपर्टी का मामला था। जिसकी विवेचना एसआई प्रशांत कुमार सिंह कर रहे थे। उसमे एकदम निष्पक्ष जांच ने उनको कम समय मे सुर्खियों में ला दिया। क्या अमीर क्या गरीब सब उनके नजरों में बराबर था। जिसके कारण उनकी लोकप्रियता धीरे धीरे कोतवाली क्षेत्र से लेकर जनपद मुख्यालय तक फैलने लगी। एक केस में भारी दवाब के बाद भी सत्य का साथ न छोड़ने वाले एसआई ने बहुत से लोगों को न्याय दिलाने का काम किया।शायद यही वजह रही हो की अब उनका तबादला एसओजी प्रभारी जौनपुर के रूप में हो गया। यही नगर के लोगों के लोगों का कहना है की ऐसे ईमानदार निडर और कर्तव्यनिष्ठ पुलिस कर्मियों की वजह से ही आम लोगों का अभी तक वर्दी पर बना हुआ है।

जौनपुर में ट्रक की चपेट में आने से बाइक सवार युवक की मौत

खुटहन जौनपुर (उत्तरशक्ति)। गोसाईपुर नहर पुलिया के पास बुधवार की रात ट्रक की चपेट में आने से एक बाइक सवार युवक की मौत हो गई। टक्कर के बाद ट्रक चालक वाहन सहित मौके से फरार हो गया। मौके पर पहुंचे थानाध्यक्ष चन्दन कुमार राय ने घायल युवक को सीएससी भेजवाए। जहां देखते ही चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। सेठुआपारा गांव निवासी 28 वर्षीय धर्मेन्द्र यादव पुत्र राजेन्द्र प्रसाद शाम को किसी काम से खुटहन बाजार आया था। जहां से वह रात लगभग साढ़े नौ बजे वापस घर लौट रहा था। उक्त नहर पुलिया के पास सामने से आ रही ट्रक की चपेट में आ गया। उसके सिर में गंभीर चोटें आने से तेज रक्त स्राव होने लगा। अस्पताल पहुंचते ही उसकी मौत हो गई। पुलिस ने शव कब्जे में लेकर पीएम हेतु भेज दिया। पुलिस दुर्घटना करने वाली ट्रक की तलाश कर रही है।

करेंट की चपेट में आने से युवक की मौत

सुजानगंज, जौनपुर(उत्तरशक्ति)। विद्युत स्पशार्घात से लाखन सिंह (30) की मौत हो गई। प्राप्त जानकारी के अनुसार लाखन सिंह पुत्र नरपत सिंह निवासी ध्वज का पूरा थाना, कंचनपुर जनपद राजस्थान, फरीदाबाद (बालवर गंज) सुजानगंज निवासी विनोद कुमार कुमार ऊमर के यहां मार्बल लगाने का काम कर रहा था। बुधवार की शाम को मार्बल लगा रहा था अचानक विद्युत धारा की चपेट में आ गया। लोग आनन फानन में सामुदायिक स्वास्थ केंद्र सुजानगंज पर ले गए। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पर चिकित्सक ने मृत घोषित कर दिया। सूचना पर पहुंची पुलिस शव को कब्जे में लेकर विधिक कार्यवाही करने में जुट गई।

पूर्व थानाध्यक्षों ने दलालों को रखा बाहर, जनता को दिया निष्पक्ष न्याय, नवागत थानाध्यक्ष से जनता को उम्मीदें

रामपुर(उत्तरशक्ति)। थाना क्षेत्र के लोग आज भी पूर्व थानाध्यक्ष मनोज पांडेय, प्रकाश शुक्ला और देवानंद रजक के कार्यकाल को याद करते हैं। इन अधिकारियों की सबसे बड़ी पहचान यह रही कि उन्होंने अपने कार्यकाल में दलालों को थाने में घुसने तक नहीं दिया। उनके रहते थाने का माहौल पारदर्शी और न्यायपूर्ण बना रहा।

जनता का कहना है कि उनके कार्यकाल में दलालों की दाल नहीं गली। जो लोग थाना परिसर में बैठकर अपना वर्चस्व कायम करना चाहते थे, वे बौखलाए रहे। जबकि आम जनता को पूरी तरह निष्पक्ष न्याय मिला। स्थानीय लोगों का यह भी कहना है कि इन अधिकारियों के रहते किसी निर्दोष व्यक्ति को झूठे मुकदमे में फँसाकर जेल नहीं भेजा गया। पारदर्शिता और सख्ती का आलम यह था कि थाने का दरवाजा दलालों के लिए बंद और जनता के लिए हमेशा खुला रहा।जनता ने साफ कहा कि ऐसे ईमानदार और निष्पक्ष थानाध्यक्ष ही असली पुलिस की पहचान हैं। इनके कार्यकाल में दलालों की आवाज दब गई, लेकिन आम जनता चैन की सांस ले सकी। अब लोगों की निगाहें नवागत थानाध्यक्ष विनोद कुमार पर टिकी हैं। क्षेत्रवासियों की अपेक्षा है कि वे भी पूर्व अधिकारियों की तरह दलालों पर अंकुश लगाकर पारदर्शिता कायम रखें और जनता को न्याय दिलाएं। देखने वाली बात यह होगी कि विनोद कुमार अपने कार्यकाल में दलालों के प्रति कैसा रुख अपनाते हैं और जनता के लिए कितने न्यायपूर्ण साबित होते हैं।

शौचालय का प्रयोग करने से नाराज पिता ने अपने पुत्र, पौत्री और बहू को पीटकर किया घायल

तहरीर पर दो के खिलाफ मुकदमा दर्ज

गौराबादशाहपुर,जौनपुर (उत्तरशक्ति)। गौराबादशाहपुर थाना क्षेत्र के भदेवरा गांव में एक पिता ने अपने ही बेटे, बहू और पोती को लाठी डंडे से पीट कर घायल कर दिया। पिटाई से एक व्यक्ति का हाथ टूट गया। स्थानीय लोगों के मदद से अस्पताल भिजवाया गया। थाना क्षेत्र के भदेवरा गांव में मंगलवार शाम को 7:00 बजे खुशबू राजभर अपने दादा के द्वारा बनवाए गए शौचालय में प्रयोग करने के लिए चली गई। जिससे नाराज होकर उसका दादा बाबूलाल राजभर अपने बेटे शिव कुमार के साथ मिलकर खुशबू को गाली- गलौज देने लगे जब खुशबू के पिता राजेश ने विरोध किया तो बाबूलाल अपने बेटे शिव कुमार के साथ मिलकर राजेश राजभर (41) खुशबू (16) एवं उसकी पत्नी प्रमिला (40) को लाठी डंडे से जमकर पीट दिया। पिता और भाई के द्वारा पिटाई से राजेश राजभर का एक हाथ टूट गया। वही उसकी पत्नी प्रमिला और बेटी खुशबू भी घायल हो गई। स्थानीय लोगों की मदद से तीनों घायलों को इलाज के लिए सीएचसी चोरसंड भिजवाया गया। प्राथमिक उपचार के बाद बुधवार को सुबह दस बजे घायल राजेश राजभर ने थाने पर पहुंचकर अपने पिता और भाई के खिलाफ नामजद तहरीर दिया। थानाध्यक्ष गौराबादशाहपुर प्रवीण यादव ने बताया कि सिर्फ शौचालय का प्रयोग कर लेने से नाराज पिता बाबू लाल ने अपने बेटे , बहु और पोती को पीटकर घायल कर दिया। जिसमें बेटे राजेश के तहरीर पर उसके पिता बाबू लाल राजभर और भाई शिव कुमार राजभर के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया गया है।

प्रधानमंत्री के जन्म दिवस पर सामुदायिक स्वास्थ केंद्र पर मेडिकल कैम्प का हुआ आयोजन

चिकित्सा अधीक्षक सहित डॉक्टरों और पूर्व चैयरमैन ने किया रक्तदान

विशाल सोनी

शाहगंज,जौनपुर(उत्तरशक्ति)। देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्म दिवस पर स्थानीय सामुदायिक स्वास्थ केंद्र पर बहुत ही धूमधाम से मनाया गया। बुधवार की सुबह से ही सामुदायिक स्वास्थ केंद्र के अधीक्षक डॉक्टर रफीक फारूकी के नेतृत्व में अस्पताल में चिकित्सा शिविर लगाया गया।जिसमें लगभग तीन सौ मरीजों के स्वास्थ परीक्षण और मुफ्त दवाएं प्रदान की गई। कार्यक्रम का उद्घाटन नगर पालिका के पूर्व चैयरमैन श्रीमती गीता प्रदीप जायसवाल ने फीता काट कर की। ततपश्चात स्वयं पूर्व चैयरमैन,अधीक्षक डॉक्टर रफीक फारूकी, डॉक्टर जमालुद्दीन खान, डॉक्टर राकेश यादव, डॉक्टर आरके वर्मा एवं स्टाफ सहित कुल ग्यारह लोगों ने रक्त दान कर

प्रधानमंत्री के जन्म दिन को सेलिब्रेट किया।

इस सम्बंध में भाजपा नेता प्रदीप जायसवाल ने कहा की देश के यशश्वी प्रधानमंत्री नरेंद मोदी के नेतृत्व देश विश्व शक्ति और विश्व गुरु बनने के मार्ग को तेजी से आगे बढ़ रहा है। वहीं अधीक्षक डॉक्टर रफीक फारूकी ने कहा की नरेन्द्र मोदी के स्वच्छ व्यक्तित्व जैसा समूचे विश्व में कोई दूसरा राष्ट्रभक्त नेता आज के वर्तमान परिवेश में नहीं दिखता है। प्रधानमन्त्री मोदी का समूचा जीवन राष्ट्र को समर्पित है, उनके व्यक्तित्व पर प्रकाश डालना जैसे सूरज को दिया दिखाने जैसा होगा। उक्त अवसर पर डॉक्टर अभिषेक रावत, डॉक्टर आरबी यादव, डॉक्टर आशीष यादव, डॉक्टर आकांक्षा सिंह, जेपी पाण्डेय, बिस्मिल्ला, वेदप्रकाश जायसवाल, धीरज पाटिल आदि प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

भगवान विश्वकर्मा पूजनोत्सव की रही धूम

◆ व्यापार मंडल कैंप कार्यालय में हुआ पूजनोत्सव

निशानाथ

खेतासराय, जौनपुर (उत्तरशक्ति)। नगर उद्योग व्यापार मंडल खेतासराय के कैंप कार्यालय में बुधवार को भगवान विश्वकर्मा पूजनोत्सव कार्यक्रम भव्य रूप में मनाया गया। समारोह का शुभारंभ भगवान विश्वकर्मा के चित्र के आगे दीप प्रज्वलित कर फल फूल, हवन पूजन, गायत्री मंत्र के साथ भव्य रूप में मनाया गया। संजय इंजीनियरिंग वर्कशॉप फर्म के अधिष्ठाता व व्यापार मंडल अध्यक्ष संजय विश्वकर्मा और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती रीना विश्वकर्मा ने

पूजा अर्चना के बाद प्रसाद वितरित किया। इसके पहले अपने कार्यस्थल और औजारों को पवित्र करके भगवान विश्वकर्मा से तरक्की, सफलता और सुरक्षा की कामना किया। ऐसी मान्यता है कि इस दिन वाहन, मशीनों और औजारों की विधिवत पूजा करने से कारोबार में प्रगति मिलती है। इस मौके पर वरिष्ठ समाजसेवी कपूर चंद्र जायसवाल, भाजपा नेता पूर्व सभासद जगदंबा प्रसाद पांडेय, आचार्य कृष्ण मुरारी मौर्य, दिव्यम विश्वकर्मा, मनोज मौर्य, पप्पू पटवा,अमित जायसवाल, विनीता मौर्य, दुर्गेश गुप्ता प्यारे मोहन श्रीवास्तव समेत भारी संख्या में नगर के लोग उपस्थित रहे।

मछलीशहर में दिनदहाड़े लाखों की चोरी से हड़कंप

मछ्लीशहर, जौनपुर (उत्तरशक्ति)। क्षेत्र के जमालपुर गांव में बुधवार को दिनदहाड़े 50 हजार की नगदी समेत लाखों के जेवर चोरी कर चोरों ने इलाके में सनसनी फैला दी।घटना के समय परिवार के लोग घर में नहीं थे। अंदर ताला बंद देख चोर मकान के पीछे पेड़ के सहारे अंदर घुसे और वारदात को अंजाम देकर रफू चक्कर हो गए।

मध्यम परिवार से ताल्लुक रखने वाले इस मकान में चोरी से पूरा परिवार सदमे में हो गया है। जांच के नाम पर पुलिस भी खाना पूर्ति करने में जुट गई है। उक्त गांव निवासी सुशील मौर्य मछ्लीशहर नगर में ब्यूटी पार्लर की दुकान चलाते हैं। वह पति-पत्नी रोज की तरह दिन में दुकान पर चले गए थे। बुधवार की दोपहर बाद लगभग तीन बजे उनका बेटा भी कमरे में ताला लगाकर कोचिंग पढ़ने के लिए चला गया। इधर पहले से घर की रेकी कर चुके शातिर चोर घर को खाली देख मकान से सटे नीम के पेड़ के सहारे छत पर चढ़कर कमरे में अंदर पहुंचे और अलमारी का ताला तोड़कर उसमें रखा 50 हजार नकदी समेत एक सोने की नथिया, चैन, मांगटीका, दो जोड़ी

50 हजार नकदी समेत लाखों का जेवर उठा ले गए चोर

पायल लेकर फरार हो गए। उक्त का बेटा जब कोचिंग पढ़ कर घर आया तो आलमारी का ताला खुला देख घबड़ा गया। वह घर में से शोर मचाते हुए बाहर निकला और लोगों को बताया। मामले की जानकारी सुशील मौर्य को हुई तो वह भागे भागे घर पहुंचे और यूपी डायल 112 नंबर पुलिस को सूचना दिए। मौके पर पहुंची पुलिस जानकारी लेकर लौट गई। इससे पहले आधा दर्जन चोरियों का नहीं हुआ खुलासा कोतवाली थाना अंतर्गत आसपास के इलाकों में पिछले दो महीने में चोरी की आधा दर्जन से अधिक वारदातें हो चुकी हैं, लेकिन जांच के नाम पर पुलिस ने अब तक एक भी मामले का खुलासा नहीं किया। गौरतलब हो कि उक्त गांव में 27 अगस्त की रात तीन घरों में भी चोरी हुई थी। जिसका आज तक पुलिस पदार्फाश नहीं कर सकी । तीन अन्य चोरी की वारदात को पुलिस ने मुकदमा दर्ज करने के बजाय ग्रामीणों को समझा बूझकर वापस भेज दिया। लगातार हो रही चोरी की घटना से ग्रामीण में दहशत है। चोरों के आतंक से भयभीत ग्रामीण रात भर पहरा दे रहे हैं। मामले में सीओ प्रतिमा वर्मा का कहना है कि घटना की जानकारी नहीं है। चोरी की वारदात की छानबीन की जा रही है। शीघ्र ही खुलासा किया जाएगा।

महिला सभासद ने वार्ड में लगे शिलापट्ट पर लिखे नाम पर ईओ द्वारा कालिख पोतने का लगाया आरोप

गौराबादशाहपुर (उत्तरशक्ति)। नगर पंचायत गौराबादशाहपुर के वार्ड बंजारेपुर उत्तरी की महिला सभासद ने जिलाधिकारी कार्यालय पहुंचकर नगर पंचायत के ईओ पर वार्ड में लगे शिलापट्ट पर लिखे नाम पर कालिख पोतवाने का आरोप लगाते हुए जिलाधिकारी को पत्र देकर जांच की मांग की। नगर पंचायत गौराबादशाहपुर के वार्ड नं 9 बंजारेपुर उत्तरी की महिला सभासद शबीना अंसारी ने बृहस्पतिवार को जिलाधिकारी कार्यालय पहुंचकर जिलाधिकारी कार्यालय में मौजूद एडीएम वित्त एवं राजस्व राम अछैबर चौहान को पत्र देते हुए आरोप लगाया कि नगर पंचायत के ईओ के द्वारा वार्ड बंजारेपुर उत्तरी में आरसीसी व इंटर लॉकिंग के कार्य होने के बाद एक सप्ताह पूर्व लगे शिलापट्ट पर लिखे महिला सभासद के नाम पर बुधवार को कालिख पोतवा कर अपमानित किया गया। जब इस बात का कारण ईओ से पूछा गया तो ईओ द्वारा अभद्रता पूर्ण बात की गई। महिला सभासद शबीना ने एडीएम वित्त व राजस्व से शिलापट्ट पर कालिख पोतवाने का आरोप लगाते हुए इस प्रकरण की जांच करवाने की मांग की। जिस पर एडीएम ने इस प्रकरण को सीआरओ से दिखवाने के लिए सभासदों को आश्वासन दिया। महिला सभासद शबीना अंसारी ने के साथ नगर पंचायत के अन्य वार्ड के सभासद व प्रतिनिधि गण अतीक अहमद, शीशवंश सिंह, अजीत विश्वकर्मा, सन्नी गुप्ता, सलामुद्दीन अंसारी, अमीक अंसारी भी मौजूद रहे। इस प्रकरण के बारे में प्रभारी अधिकारी स्थानीय निकाय सी आर ओ अजय कुमार अम्बष्ठ ने बताया कि आज जिलाधिकारी कार्यालय में जनसुनवाई के दौरान नगर पंचायत गौराबादशाहपुर के एक महिला सभासद शबीना अंसारी के द्वारा यह शिकायत की गई है। इस प्रकरण को निष्पक्ष तरीके जांच की जाएगी।

डीएम को दिया प्रार्थना पत्र, जांच कराने की किया मांग

प्रभारी अधिकारी स्थानीय निकाय सीआरओ करेंगे मामले की जांच

श्रद्धाभाव से मनाया गया विश्वकर्मा पूजा

-तारकेश्वर पांडे

मीरा भायंदर (उत्तरशक्ति)। मीरा भायंदर काशीमीरा वेस्टर्न होटल स्थित में विश्वकर्मा पूजा धूमधाम एवं भक्तिभाव के साथ मनाई गई। इस अवसर पर भगवान विश्वकर्मा की सुंदर प्रतिमाएं स्थापित की गईं और पंडालों को आकर्षक ढंग से सजाया गया। पूजा स्थलों पर दिन भर भजन-कीर्तन का सिलसिला चलता रहा, जिसमें स्थानीय लोगों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। भगवान विश्वकर्मा से अपने व्यापार और जीवन में समृद्धि की कामना की। पूजा की शुरूआत सुबह से ही हो गई, जब कारीगरों, मजदूरों और व्यवसायियों ने अपने औजारों और मशीनों की पूजा की। उनका मानना है कि ऐसा करने से उनके काम में बरकत आती है और वे साल भर सुरक्षित रहते हैं। वर्कशॉप और गैरेज जैसे स्थानों पर विशेष पूजा का आयोजन किया गया। इन जगहों को रंगीन रोशनी और फूलों से सजाया गया था। लोगों ने भगवान विश्वकर्मा से अपने व्यापार और जीवन में समृद्धि की कामना की। इस अवसर पर आए हुए सभी अतिथियों को संजय सिंह द्वारा गुलदस्ता भेंट कर स्वागत सम्मान किया, और पूजा में उपस्थित होने के लिए आभार प्रकट किया।

भाजपा कार्यकताओं ने केक काट कर मनाया पीएम मोदी का जन्मदिन

प्रतिनिधि, महाराजगंज सिवान (उत्तरशक्ति)। बिहार के सिवान जिला अंतर्गत महाराजगंज में भारत के प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी का जन्मदिन बुधवार को भाजपा के नगर अध्यक्ष अमरजीत सिंह के आवास पर केक काट कर भाजपा के नगर अध्यक्ष अमरजीत सिंह के नेतृत्व में मनाया गया। इस दौरान भाजपा नेता अमरजीत सिंह ने कहा कि प्रधानमंत्री के नेतृत्व में भारत ने वैश्विक स्तर पर अपनी जो छवि विकसित की है, उसके प्रति पूरा विश्व भारत को आदर से देख रहा है। उन्होंने आश्वान किया कि वर्ष 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के लिए प्रधान मंत्री के लक्ष्य को हम सभी को पूरा करना है ताकि भारत विश्व गुरू के रूप में अपनी प्रतिष्ठा प्राप्त कर सके.उन्होंने कहा कि जिस प्रकार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश की दिन-दोगुनी रात चौगुनी तरक्की हो रही है.ये सभी के लिए गौरव का क्षण है. मौके पर नगर उपाध्यक्ष आत्मा कुमार सिंह,पवन कुमार,रिशु बाबा, दिलीप कुमार सिंह, मामोद कुमार,मो.आरीफ आदि शामिल थे।

जमाबंदी सुधार के लिए धोबवलिया में लगाया गया शिविर

सिवान (उत्तरशक्ति)। बिहार के सिवान जिला अंतर्गत महाराजगंज प्रखंड के जीगरवां पंचायत के धोबवलिया बाजार पर मंगलवार को जमाबंदी सुधार व नामांतरण शिविर का आयोजन किया गया। इससे पूर्व पाँच दिन पहले पंचायत के विभिन्न गाँवों में किसानों को जमाबंदी पंजी का वितरण किया गया था, ताकि उसमें अपना खाता, खेसरा, रकबा, रैयत का नाम, बटवारा एवं उत्तराधिकार संबंधी विवरण दर्ज कर शिविर में प्रस्तुत कर सकें। शिविर में अंचलाधिकारी जितेंद्र पासवान, राजस्व पदाधिकारी रसीद हसन , शिविर के प्रभारी पंचायत के राजस्व कर्मचारी कमलेश कुमार , सौरभ कुमार विनय कुमार, हिना भारती, शिवानी वर्मा शामिल थी। इस दौरान कुल 210 आवेदन प्राप्त हुए, शिविर प्रभारी कमलेश कुमार ने बताया प्राप्त आवेदनों को कंप्यूटर ऑपरेटर द्वारा ऑनलाइन कर दिया गया है। रैयतों को पहले ही त्रुटि प्रति बात दी गई थी। जिसे किसान आवेदन भर के शिविर में जमा किए। शेष बचे किसान 20 सितंबर को लगने वाले शिविर में जमा करेंगे। इसी प्रकार सभी पंचायतों में शिविर का आयोजन किया जायेगा।

जौनपुर कानून व्यवस्था में पिछड़ा, प्रदेश में 25वें स्थान पर सोनभद्र-वाराणसी से अधिक अपराध

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। उत्तर प्रदेश के जौनपुर जिले की कानून व्यवस्था चिंताजनक स्थिति में पहुंच गई है। सीएम डैशबोर्ड पर जारी ताजा रैंकिंग में जौनपुर प्रदेश में 25वें स्थान पर आ गया है। अपराध के मामलों में जौनपुर ने सोनभद्र, वाराणसी और भदोही जैसे जिलों को भी पीछे छोड़ दिया है। सोनभद्र और वाराणसी संयुक्त रूप से आठवें पायदान पर हैं, जबकि भदोही 23वें स्थान पर है। पूर्वांचल के अन्य जिलों में मिजार्पुर 40वें, चंदौली 44वें, गाजीपुर 48वें, आजमगढ़ 60वें, बलिया 65वें और मऊ 66वें नंबर पर हैं। इसके मुकाबले जौनपुर का 25वें स्थान पर पहुंचना यहां अपराध की गंभीर तस्वीर पेश कर रहा है। जौनपुर में तीन हजार से ज्यादा पुलिस अधिकारी और जवान तैनात हैं। करीब 50 लाख आबादी वाले जौनपुर में तीन हजार से ज्यादा पुलिस अधिकारी और जवान तैनात हैं। बावजूद इसके अपराध दर पर अंकुश नहीं लग पा रहा है। मार्च से जुलाई तक जिले की रैंकिंग 31वें से 43 वें स्थान के बीच रही, लेकिन अगस्त में इसमें 13 अंकों की गिरावट दर्ज हुई और जौनपुर सीधे 25वें पायदान पर आ गया। जानकारों के मुताबिक, हत्या, चोरी, महिला उत्पीड़न और भूमि विवाद जैसे मामलों में लगातार बढ़ोतरी हो रही है। कई मामलों में पुलिस की कार्रवाई सुस्त रही और विवेचना की गुणवत्ता पर भी सवाल उठे। यही वजह है कि जिले की रैंकिंग लगातार नीचे खिसकती जा रही है।

श्रद्धाभाव से मनाया गया विश्वकर्मा पूजा

सिवान (उत्तरशक्ति)। बिहार के सिवान जिला अंतर्गत महाराजगंज प्रखंड क्षेत्र में विश्वकर्मा पूजा धूमधाम और भक्तिभाव के साथ मनाई गई। इस अवसर पर, जगह-जगह भगवान विश्वकर्मा की सुंदर प्रतिमाएं स्थापित की गईं और पंडालों को आकर्षक ढंग से सजाया गया। पूजा स्थलों पर दिन भर भजन-कीर्तन का सिलसिला चलता रहा, जिसमें स्थानीय लोगों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।भगवान विश्वकर्मा से अपने व्यापार और जीवन में समृद्धि की कामना की। पूजा की शुरूआत सुबह से ही हो गई, जब कारीगरों, मजदूरों और व्यवसायियों ने अपने औजारों और मशीनों की पूजा की। उनका मानना है कि ऐसा करने से उनके काम में बरकत आती है और वे साल भर सुरक्षित रहते हैं। वर्कशॉप और गैरेज जैसे स्थानों पर विशेष पूजा का आयोजन किया गया। इन जगहों को रंगीन रोशनी और फूलों से सजाया गया था। लोगों ने भगवान विश्वकर्मा से अपने व्यापार और जीवन में समृद्धि की कामना की। इस दौरान, कई स्थानों पर भंडारे का भी आयोजन किया गया, जहां प्रसाद के रूप में भोजन वितरित किया गया।

धूमधाम से मनाया गया समाजसेवी डॉ. गणेश जायसवाल का जन्मदिन

मुंबई (उत्तरशक्ति)। सुप्रसिद्ध समाजसेवी एवं वरिष्ठ चिकित्सक डॉ. गणेश जायसवाल का जन्मदिन उनके भांडुप स्थित क्लिनिक (विलेज रोड) पर भव्य समारोह के रूप में धूमधाम से मनाया गया। इस खास अवसर पर मेडिकल क्षेत्र से जुड़ी अनेक नामचीन हस्तियों ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति दर्ज कराई। इस समारोह में डॉ. नरेश मेहता (एम.डी.), डॉ. रविंद्र गुल्ले (हृदय रोग सर्जन), डॉ. जीतेन्द्र चौधरी (सर्जन), डॉ. जिनेश पठानी (नेत्र सर्जन), डॉ. प्रशांत पड़वल (एम.डी. - चेस्ट), डॉ. सी. वी. पाटील, डॉ. सचिन सिंह (अध्यक्ष, युवा ब्रिगेड एसोसिएशन) सहित अन्य प्रतिष्ठित चिकित्सकों जैसे डॉ. जुवेकर, डॉ. रमेश गुप्ता, डॉ. जंगबहादुर यादव, डॉ. सुनील मिश्रा, डॉ. मजीद, डॉ. संजय शुक्ला, डॉ. राजेश कुमार, डॉ. शमीर्ला जैन, डॉ. राजेश खेर, डॉ. गिरी, डॉ. जे. पी. यादव, डॉ. विनोद, डॉ. सुरेश गुप्ता, डॉ. राम शिंदे और डॉ. जीतेन्द्र पवार ने अपनी उपस्थिति दर्ज की।

एल .आई .सी . का काम छोड1 टिश्यू कल्चर केले की तरफ किया रूख

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। जिला उद्यान अधिकारी ने अवगत कराया है कि 17 सितम्बर 2025 को एकीकृत बागवानी विकास मिशन योजना वर्ष 2025-26 अन्तर्गत टास्कफोर्स कमेटी द्वारा कृषक प्रक्षेत्र टिश्यू कल्चर केले की खेती का स्थलीय सत्यापन किया गया।

मौके पर जिला उद्यान अधिकरी, वरिष्ठ वैज्ञानिक डा0 सुरेश कुमार कन्नौजिया कृषि विज्ञान केन्द्र बक्शा, प्रभारी मिशन एंव लाभार्थी कृषक मौके पर उपस्थित रहे। विकासखंड रामपुर स्थित फत्तुपुर गांव के युवा किसान संजय मिश्रा ने एलआईसी की नौकरी छोड़कर 2 हेक्टेयर क्षेत्रफल में केले की खेती करके एक नई मिसाल पेश की है। केले की खेती से संजय ने पाया कि केले की खेती से उन्हें एलआईसी से ज्यादा 1 हेक्टेयर में लगभग 11 से 12 लाख रुपए की आमदनी हो रही है जिसके बाद उन्होंने पूरी तरह से केले की खेती को अपना लिया। उनकी सफलता से प्रेरित होकर गांव और आसपास के अन्य युवा भी अब केले की खेती की तरफ रुख कर रहे हैं। संजय मिश्रा ने बताया कि नौकरी में एक सीमित आय थी लेकिन केले की खेती में मेहनत और सही मार्गदर्शन से कमाई में कई गुना इजाफा हुआ है। उन्होंने कहा मैने पाया कि केले की खेती न केवल आर्थिक रूप से अधिक लाभदायक है बल्कि यह मुझे अपनी जमीन से भी जोड़े रखती है।

जिला उद्यान अधिकारी डा0 सीमा सिंह राणा ने संजय मिश्रा की सराहना करते हुए कहा की सफलता यह साबित करती है कि अगर युवा सही दिशा में प्रयास करें तो कृषि क्षेत्र में भी बड़ी सफलता हासिल कर सकते हैं। हमारा विभाग ऐसे युवा किसानों को हर संभव मदद देने के लिए प्रतिबद्ध है। साथ में वरिष्ठ वैज्ञानिक कृषि विज्ञान केन्द्र बक्शा डा0 सुरेश कुमार कन्नौजिया भी कृषक प्रक्षेत्र पर मौके पर उपस्थित रहे तथा केले की आधुनिक खेती, रोग उपचार फसलो की देखभाल आदि की विस्तृत जानकारी देते हुए कृषक का ज्ञानवर्द्धन किया गया। डा0 राणा ने बताया कि विभाग की तरफ से किसानों को टिशू कल्चर विधि से तैयार किए गए केले के उन्नत पौधे उपलब्ध कराए जाते है। जो अच्छी उपज देते हैं। साथ ही उन्हें खाद सिंचाई और फसल सुरक्षा के बारे में भी मार्गदर्शन दिया जाता है। संजय मिश्रा की यह कहानी उन सभी युवाओं के लिए प्रेरणा है जो नौकरी की तलाश में हैं और उन्हें दिखाती है कि खेती में भी एक उज्ज्वल भविष्य है। कृषक को सलाह दी गयी कि ड्रिप इरीगेशन, मिनी स्प्रिंकलर, का प्रयोग कर और अधिक लाभ हो सकता है तथा बताया गया कि विभाग से पी0एम0एफ0एम0ई0 योजनान्तर्गत केले के चिप्स नमकीन आदि बनाने की प्रोसेसिंग यूनिट गांव में लगायी जाये, वैल्यू एडीसन करने से उन्हे ही नही अन्य ग्राम व जनपदवासियों को भी इसका लाभ मिलेगा। राइपनिंग चैम्बर व कोल्ड रूम बनाने पर कृषको के मध्य चर्चा की गयी। सजंय मिश्रा के अतिरिक्त जीरा सिंह, प्रिति सिंह, संजीत सिंह, दुर्गा सिंह ग्राम फत्तूपुर, भरसथ विकासखण्ड रामपुर कृषको के प्रक्षेत्र का निरीक्षण कर उचित सलाह दी गयी।

गुजरात में आयोजित व्यवसाय गोष्ठी में वरिष्ठ सांसदों से हुई मुलाकात

अहमदाबाद(उत्तरशक्ति)। हाल ही में गुजरात में सम्पन्न हुई एक महत्वपूर्ण व्यवसाय गोष्ठी के दौरान देश भर से पधारे लगभग 30 सांसदों के प्रतिनिधिमंडल से विचार-विमर्श का अवसर प्राप्त हुआ। इस अवसर पर समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं सांसद दारोगा प्रसाद सरोज से विशेष रूप से मुलाकात हुई। इस विशेष भेंट में गुजरात प्रदेश महासचिव अच्चेलाल पांडेय तथा प्रदेश सचिव हरेराम यादव की उपस्थिति भी रही। गोष्ठी के दौरान राष्ट्रीय और प्रांतीय विषयों, राजनीतिक परिस्थितियों, संगठनात्मक मजबूती एवं आगामी रणनीतियों पर गहन चर्चा की गई। श्री सरोज ने अपने विशाल राजनीतिक अनुभव एवं संघर्षमयी जीवन यात्रा से उपस्थित प्रतिनिधियों को अवगत कराया। उनका सरल स्वभाव, स्पष्ट दृष्टिकोण और जनसेवा के प्रति गहन निष्ठा सभी के लिए अत्यंत प्रेरणादायी रही। उन्होंने यह आश्वासन भी दिया कि गुजरात से जुड़े किसी भी महत्वपूर्ण विषय अथवा समाजवादी पार्टी के राजनीतिक प्रश्नों को वे व्यक्तिगत संज्ञान में लेकर संसद में प्रखरता से उठाएंगे। साथ ही, उन्होंने आगामी संसद सत्र के दौरान दिल्ली में पधारने का विशेष आमंत्रण भी दिया और हरसंभव सहयोग का भरोसा दिलाया। यह संवाद न केवल ज्ञानवर्धक रहा, बल्कि संगठनात्मक दृष्टिकोण से भी एक नई ऊर्जा और दिशा देने वाला सिद्ध हुआ। प्रदेश सचिव अरुण पांडेय ने सांसद का हृदय से आभार प्रकट करते हुए कहा, दारोगा प्रसाद सरोज का स्नेह, मार्गदर्शन और सहयोग हमारे संगठन के लिए अत्यंत मूल्यवान है। उनके विचार और अनुभव हम सभी को आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं।

VESCOA इसमें वास्तुकला उत्कृष्टता का प्रदर्शन होगा

मुंबई। विवेकानंद एजुकेशन सोसाइटी का कॉलेज ऑफ आर्किटेक्चर (VESCOA), जोन-3 क्षेत्रीय केंद्र के रूप में वास्तुकला थीसिस में उत्कृष्टता (AEAT) और वास्तुकला विरासत के दस्तावेजीकरण में उत्कृष्टता (DAH) के लिए प्रतिष्ठित काउंसिल ऑफ आर्किटेक्चर (उडअ) अवाड्र्स 2025 की मेजबानी करेगा। यह तीन दिवसीय कार्यक्रम रचनात्मकता, नवाचार और शैक्षणिक दृढ़ता के उत्सव के लिए वास्तुकला के क्षेत्र के अग्रणी, शिक्षकों, पेशेवर पेशेवरों और क्षेत्र के सबसे प्रतिभाशाली छात्रों को एक साथ लाएगा। जोन-3 के अंतर्गत महाराष्ट्र भर के अग्रणी संस्थानों से 120 थीसिस प्रविष्टियों और 30 विरासत दस्तावेजीकरण परियोजनाओं के साथ, यह आयोजन क्षेत्रीय पुरस्कारों के सबसे गतिशील संस्करणों में से एक होने का वादा करता है। कार्यक्रम की शुरूआत चेंबूर स्थित श्एरउडअ में एक शोध-प्रबंध प्रदर्शनी के उद्घाटन के साथ हो गई, जिसमें श्एरउडअ के प्राचार्य डॉ. प्रो. आनंद अचारी एवं श्री. तुकाराम काटे, प्रतिष्ठित गणमान्य व्यक्ति, विवेकानंद शिक्षा समिति के सदस्य और आमंत्रित अतिथि उपस्थित होंगे। यह आयोजन 17 से 19 सितंबर 2025 तक आयोजित होगा। यह प्रदर्शनी आम जनता के लिए खुली रहेगी, जिससे छात्रों, पेशेवरों और नागरिकों को ग्रामीण और शहरी, दोनों ही चुनौतियों से निपटने वाले नवीन वास्तुशिल्प विचारों से जुड़ने का अवसर मिलेगा। इसके बाद भारत भर से जूरी सदस्यों का एक प्रतिष्ठित पैनल चयनित प्रविष्टियों का मूल्यांकन करेगा। उनकी जाँच और प्रतिक्रिया से छात्रों को अमूल्य अंतर्दृष्टि प्राप्त होगी, जिससे एक निष्पक्ष और पारदर्शी मूल्यांकन प्रक्रिया सुनिश्चित होगी।

इस आयोजन के बारे में बोलते हुए श्एरउडअ के प्राचार्य डॉ. प्रो. आनंद अचारी ने कहा कि उडअ थीसिस पुरस्कारों की मेजबानी करना श्एरउडअ के लिए सम्मान की बात है। यह एक ऐसा मंच बनाने के हमारे दृष्टिकोण के अनुरूप है जो ज्ञान-साझाकरण, रचनात्मकता और मूल्य-आधारित शिक्षा को प्रोत्साहित करते हुए एक स्थायी, मानवीय आवास के निर्माण के प्रति संवेदनशीलता को बढ़ावा देता है। इस पहल के माध्यम से श्एरउडअ अकादमिक संवाद और व्यावसायिक विकास का केंद्र बनने के अपने मिशन को जारी रखते हुए, वास्तुकला शिक्षा में एक अग्रणी संस्थान के रूप में अपनी भूमिका को और मजबूत करेगा।

जेबीजी सातारा हिल हाफ मैराथन 2025 बारिश में भी रंगा जोश और नए रिकॉर्ड

मुंबई/सातारा। तेज बारिश के बावजूद 8,500 से ज्यादा धावक रविवार सुबह सातारा में जुटे और जेबीजी सातारा हिल हाफ मैराथन, माला स फ्रूट प्रोडक्ट्स प्रायोजित, के 14वें साल को यादगार बना दिया। जैसे ही आसमान साफ हुआ, सातारा ने एक और ऐतिहासिक दिन देखा। सड़कोंीू्ल्लॅ करने वाले लोग, हर जगह सक्रिय स्वयंसेवक और पहाड़ी रास्तों पर दौड़ते हजारों धावक झ्र इस दौड़ ने एक बार फिर साबित किया कि यह भारत की सबसे खास और पसंदीदा मैराथनों में से एक है। बच्चों के लिए मददः इस बार के चैरिटी बिब्स से सातारा की 8 से ज्यादा स्कूलों के 2,000 बच्चों को खेल सामग्री मिली। फुटबॉल, बास्केटबॉल, कैरम और शतरंज जैसे खेल अब इन स्कूलों में बच्चों की रोजमर्रा की पढ़ाई के साथ जुड़ेंगे।

एक्सपो में रौनकः दौड़ से पहले हुआ जेबीजी फिटनेस एक्सपो 2025, पुनित बालन ग्रुप द्वारा प्रस्तुत, सबसे बड़ा आकर्षण रहा। दो दिनों में 30,000 से ज्यादा लोग एक्सपो में आए और 50 से अधिक ब्रांड्स ने अपनी चीजें और सेवाएँ दिखाईं। उद्घाटन सौ. वेदांतिकाराजे भोसले (वहिनी साहेब) ने दीप जलाकर किया। पहली बार लाइव कवरेजः इस साल दौड़ का ऋ्लउङ्गी और ी24ळंर पर सीधा प्रसारण हुआ। यह भारत की पहली हाफ मैराथन बनी जिसे डिजिटल प्लेटफॉर्म पर लाइव दिखाया गया।

मान्यता प्राप्त पत्रकारों को फिर मिलेगी रेल किराए में 50 फीसदी छूट

सुरेश गांधी

वाराणसी। लंबे समय से मांग कर रहे मान्यता प्राप्त पत्रकारों के लिए राहत भरी खबर आई है। सांसद साधना सिंह के प्रयासों से रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने पूर्व में दी जा रही 50 प्रतिशत छूट को फिर से लागू करने का भरोसा दिलाया है। जानकारी के अनुसार, सांसद साधना सिंह ने मान्यता प्राप्त पत्रकारों को यात्रा में हो रही कठिनाई को देखते हुए यह मामला केंद्र सरकार के सामने उठाया। उन्होंने रेल मंत्री को पत्र भेजकर पुराने आदेश को बहाल करने की मांग की। पत्रकार संगठनों ने सांसद साधना सिंह के प्रयास और रेल मंत्री के आश्वासन का स्वागत किया है। उनका कहना है कि समाचार संकलन के लिए लगातार यात्रा करने वाले पत्रकारों को इससे बड़ी राहत मिलेगी। रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने मार्च - अप्रैल 2025 में पत्र संख्या 4739/2025 के तहत संबंधित निदेशालय को विस्तृत जांच कर रिपोर्ट प्रस्तुत करने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि पत्रकारों की सुविधा को प्राथमिकता दी जाएगी। रेलवे सूत्रों के मुताबिक जांच रिपोर्ट मिलते ही इस सुविधा को दोबारा शुरू करने की प्रक्रिया तेज होगी। उम्मीद की जा रही है कि मान्यता प्राप्त पत्रकारों को फिर से टिकट पर आधे किराए की छूट मिल सकेगी।

बीएचयू ट्रॉमा सेंटर मे इलाज से पहले बेबसी का दर्द, टूटा कमोड, उखड़े दरवाजे, गायब वॉशबेसिन

सुरेश गांधी

वाराणसी(उत्तरशक्ति)। काशी हिंदू विश्वविद्यालय का नाम चिकित्सा शिक्षा और शोध का मानक माना जाता है। मगर इसी नामचीन संस्थान के ट्रॉमा सेंटर के मनोविज्ञान वार्ड की हकीकत उस मानक का मजाक उड़ाती है। यहां न इलाज की सहजता दिखती है, न ही मानवीय गरिमा का सम्मान। वार्ड की स्थिति भयावह है. कहीं कमोड टूटा पड़ा है, कहीं दरवाजे गायब, तो कई कमरों में वॉशबेसिन तक उखड़ा हुआ। मरीज और परिजन शौचालय और स्नान जैसी बुनियादी जरूरतों के लिए अस्पताल के बाहर सुलभ शौचालय का रुख करने को मजबूर हैं। यह मानसिक रूप से पीड़ित लोगों के लिए अपमान और अतिरिक्त कष्ट दोनों है। सबसे चौंकाने वाली बात यह है कि यहां विभिन्न प्रकृति के मनोवैज्ञानिक रोगियों, अवसाद, सिजोफ्रेनिया, उन्माद या गहरे आघात से गुजरने वाले, सभी को एक ही वार्ड और लगभग एक ही श्रेणी में रख दिया गया है। अलग-अलग जरूरतों वाले मरीजों को एक साथ ठूंस देना न केवल चिकित्सा विज्ञान के सिद्धांतों के खिलाफ है, बल्कि कई मामलों में खतरनाक भी हो सकता है। ऐसे माहौल में जिन मरीजों को शांति, निजता और विशिष्ट देखभाल चाहिए, वे भय, असुरक्षा और असुविधा का शिकार हो रहे हैं। शिकायतें बार-बार हुईं, पर प्रशासन अब तक कानों में तेल डाले बैठा है। करोड़ों की योजनाएं और ऊंचे दावे कागजों पर चमकते हैं, लेकिन एक शौचालय ठीक कराने, वार्डों की श्रेणीकरण व्यवस्था सुधारने और न्यूनतम मानवीय गरिमा सुनिश्चित करने की फुर्सत किसी को नहीं। यह केवल लापरवाही नहीं, संवेदनहीनता की पराकाष्ठा है। बीएचयू को तुरंत कदम उठाते हुए वार्ड की मरम्मत, शौचालय व्यवस्था और मरीजों के लिए अलग-अलग श्रेणीकरण की वैज्ञानिक व्यवस्था करनी चाहिए। अन्यथा यह बदनामी न सिर्फ बीएचयू की प्रतिष्ठा को कलंकित करेगी, बल्कि पूरे चिकित्सा तंत्र पर प्रश्नचिन्ह लगाएगी। विशेषज्ञों का कहना है कि मानसिक स्वास्थ्य का इलाज वहां शुरू होता है, जहां इंसान को सम्मान और सुरक्षित वातावरण मिले। बीएचयू को याद रखना चाहिए, बिना संवेदना के कोई उपचार पूरा नहीं होता। हद नहीं तो और क्या है? मरीजों और उनके साथ आए परिजनों को शौचालय व स्नान जैसी बुनियादी सुविधा न मिलने के कारण अस्पताल परिसर के बाहर बने सुलभ शौचालय का सहारा लेना पड़ रहा है। इससे न केवल गंभीर रूप से बीमार मरीजों को अतिरिक्त कष्ट उठाना पड़ रहा है, बल्कि साफ-सफाई और संक्रमण का खतरा भी बढ़ गया है। परेशान परिजनों ने अस्पताल प्रशासन से कई बार शिकायत की, मगर अब तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई। मरीजों का कहना है कि बड़े संस्थान और नामी विश्वविद्यालय के अस्पताल में ऐसी स्थिति स्वास्थ्य सेवाओं की लापरवाही को उजागर करती है। स्थानीय लोगों का आग्रह है कि अस्पताल प्रबंधन तुरंत वार्ड की मरम्मत कर मरीजों को मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध कराए, ताकि मानसिक स्वास्थ्य का उपचार लेने आए लोग और उनके परिजन स्वच्छ व सुरक्षित वातावरण में रह सकें।

मछली शहर पड़ाव पर पं. चंद्रबदन मिश्रा ने किया विश्वकर्मा पूजा

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। धार्मिक पुस्तक भण्डार एवं पूजा सामग्री घर पं चन्द्रबदन पुत्र परम पूज्य गोरखनाथ मिश्र पावन महावीर धाम अजोसी जौनपुर के बाबा जी कुटिया मछली शहर पड़ाव जौनपुर उत्तर प्रदेश भारत हिन्दू महासभा के तरफ से विश्वकर्मा पूजा बड़े धूम धाम से मनाया सभी भक्तों पर विश्वकर्मा भगवान की कृपा सदैव बनी रहे।

COA थीसिस अवार्ड्स जोन-3 की मेजबानी करेगा VESCOA इसमें वास्तुकला उत्कृष्टता का होगा प्रदर्शन

मुंबई। विवेकानंद एजुकेशन सोसाइटी का कॉलेज ऑफ आर्किटेक्चर (VESCOA), जोन-3 क्षेत्रीय केंद्र के रूप में वास्तुकला थीसिस में उत्कृष्टता (AEAT) और वास्तुकला विरासत के दस्तावेजीकरण में उत्कृष्टता (DAH) के लिए प्रतिष्ठित काउंसिल ऑफ आर्किटेक्चर (COA) अवार्ड्स 2025 की मेजबानी करेगा। यह तीन दिवसीय कार्यक्रम रचनात्मकता, नवाचार और शैक्षणिक दृढ़ता के उत्सव के लिए वास्तुकला के क्षेत्र के अग्रणी, शिक्षकों, पेशेवर पेशेवरों और क्षेत्र के सबसे प्रतिभाशाली छात्रों को एक साथ लाएगा। जोन-3 के अंतर्गत महाराष्ट्र भर के अग्रणी संस्थानों से 120 थीसिस प्रविष्टियों और 30 विरासत दस्तावेजीकरण परियोजनाओं के साथ, यह आयोजन क्षेत्रीय पुरस्कारों के सबसे गतिशील संस्करणों में से एक होने का वादा करता है। कार्यक्रम की शुरूआत चेंबूर स्थित VESCOA में एक शोध-प्रबंध प्रदर्शनी के उद्घाटन के साथ होगी, जिसमें प्रतिष्ठित गणमान्य व्यक्ति, विवेकानंद शिक्षा समिति के सदस्य और आमंत्रित अतिथि उपस्थित होंगे। यह प्रदर्शनी आम जनता के लिए खुली रहेगी, जिससे छात्रों, पेशेवरों और नागरिकों को ग्रामीण और शहरी, दोनों ही चुनौतियों से निपटने वाले नवीन वास्तुशिल्प विचारों से जुड़ने का अवसर मिलेगा। इसके बाद भारत भर से जूरी सदस्यों का एक प्रतिष्ठित पैनल चयनित प्रविष्टियों का मूल्यांकन करेगा। उनकी जाँच और प्रतिक्रिया से छात्रों को अमूल्य अंतर्दृष्टि प्राप्त होगी, जिससे एक निष्पक्ष और पारदर्शी मूल्यांकन प्रक्रिया सुनिश्चित होगी। इस कार्यक्रम का समापन पुरस्कार समारोह और पुस्तक विमोचन के साथ होगा, जिसमें दोनों श्रेणियों में उत्कृष्ट योगदानों को सम्मानित किया जाएगा और वास्तुशिल्प उत्कृष्टता के भविष्य का जश्न मनाया जाएगा। इस दिन जूरी की खुली प्रस्तुतियाँ होंगी, जिससे यह सुनिश्चित होगा कि यह प्रक्रिया बौद्धिक रूप से आकर्षक और सभी उपस्थित लोगों के लिए सुलभ बनी रहे।

भाई की सैलरी में चाहता था हिस्सा, नहीं मिला तो भाभी,भतीजी व भतीजे को काट डाला, मिली उम्रकैद

मिजार्पुर (उत्तरशक्ति)। उत्तर प्रदेश के मिजार्पुर जनपद में नवंबर 2021 में एक दिल दहला देने वाली वारदात हुई थी। देवर ने अपनी सगी भाभी और 6-7 साल के सगे भतीजे-भतीजी की कुल्हाड़ी से काटकर हत्या कर दी थी। इस मामले में कोर्ट ने 4 साल बाद फैसला सुनाते हुए देवर को उम्रकैद की सजा सुनाई है। सरकारी वकील आलोक राय ने बताया कि मिजार्पुर में नवंबर 2021 में हुए ट्रिपल मर्डर केस के मामले में जिला जज अरविंद कुमार मिश्रा ने देवर को दोषी मानते हुए उम्रकैद की सजा सुनाई है। साथ ही 20 हजार रुपए का अर्थ दंड भी लगाया है।

सरकारी वकील आलोक राय ने बताया कि कटरा कोतवाली क्षेत्र के डंगहर मोहल्ले में 20 नवंबर 2021 को दिनदहाड़े महिला और उसके दो बच्चों की कुल्हाड़ी से हत्या कर दी गई थी। कोतवाली कटरा के डंगहर मोहल्ले के रहने वाले यज्ञ नारायण ने अपने छोटे भाई के खिलाफ हत्या का मुकदमा दर्ज कराया था। पुलिस को बताया था कि मेरी पत्नी रेनू 35 वर्ष, बेटी हर्षिता 7 वर्ष, बेटे आरुष 6 वर्ष की उसके सगे भाई देवनारायण उर्फ टीटू ने कुल्हाड़ी मारकर हत्या कर दी है। देवनारायण अविवाहित था। यज्ञनारायण के अनुसार उसके पिता डाकघर में चपरासी थे। 2010 में उनका निधन हो गया। इसके बाद उसे मृतक आश्रित के रूप में वहीं पर चपरासी की नौकरी मिल गई। उसकी सैलरी से वह परिवार चला रहा था।

यज्ञनारायण ने पुलिस को बताया था कि उसका छोटा भाई देवनारायण उससे सैलरी में हिस्सा मांगता था. कहता था कि पिता की जगह नौकरी लगी है, इसलिए उसे भी उसका पैसा चाहिए। इस पर वह और रेनू कहते थे कि अविवाहित हो बेफिजूल के खर्च करोगे, जब जितनी जरूरत हो ले लेना। इसी बात के चलते वह नाराज रहता था और इसके चलते ही उसने तीनों की हत्या कर दी। सरकारी वकील आलोक राय ने बताया कि कटरा पुलिस द्वारा विवेचना के बाद आरोप पत्र न्यायालय में प्रस्तुत किया गया। 23 अगस्त 2023 को आरोप तय होने के बाद विचरण गवाही शुरू हुई. पुलिस द्वारा कुल्हाड़ी व आरोपी के कपड़े खून से सने हुए रिकवर किए थे। ट्रायल में देवनारायण के खिलाफ कुल 10 लोगों ने गवाही दी। जिसमें दोष सिद्ध पाए जाने पर जनपद न्यायाधीश ने आजीवन कारावास की

हत्यारोपी पिता व तीन पुत्रों को उम्र कैद, जमीनी रंजिश में 11 वर्ष पूर्व हुई थी हत्या

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। अपर सत्र न्यायाधीश एफटीसी द्वितीय अपर्णा देव की अदालत ने जलालपुर थाना क्षेत्र में 11 वर्ष पूर्व आबादी की जमीन की विवाद को लेकर चाकू व गुप्ती से मार कर हत्या करने के आरोपी पिता व तीन पुत्रों को आजीवन कारावास एवं ?22000 अर्थ दंड से दंडित किया। अभियोजन कथानक के अनुसार वादिनी पूनम निवासी ग्राम मरही थाना जलालपुर ने एक जुलाई 2014 को मुकदमा दर्ज करवाया की रात 8:30 बजे पुरानी आबादी की रंजिश को लेकर विजय सरोज ने घर में घुसकर महिलाओं को गंदी-गंदी गाली देना व जान से मारने की धमकी देना शुरू किया। मना करने पर विजय ईंट से हमला कर दिया। वादिनी के चिल्लाने पर पड़ोसी दुलारी देवी, राजेश, सुनील व काजू दौड़कर बीच बचाव करने को आए तो विजय के भाई अजय, संजय एवं उसके पिता राम आसरे भी आ गए और सब लोग मिलकर कहा कि इसे मारकर खत्म कर दो। उसके बाद आरोपियों ने दुलारी, राजेश, सुनील व काजू को चाकू गुप्ती और ईंट से मारकर बुरी तरह घायल कर दिया। घायल अवस्था में अस्पताल ले जाने पर डॉक्टर ने दुलारी देवी को मृत घोषित कर दिया और गंभीर रूप से घायल राकेश को वाराणसी के लिए रेफर कर दिया। पुलिस ने विवेचना करके आरोप पत्र न्यायालय में प्रस्तुत किया। शासकीय अधिवक्ता वीरेंद्र प्रताप मौर्य के द्वारा परीक्षित कराए गए गवाहों के बयान एवं पत्रावली पर उपलब्ध साक्ष्यों के परिशीलन के पश्चात अदालत ने राम आसरे सरोज व उसके तीनों पुत्रों विजय सरोज, अजय सरोज व संजय सरोज को हत्या के आरोप में दोषसिद्ध पाते हुए आजीवन कारावास व 22000 रुपए अर्थ दंड से दंडित किया।

अखिल भारतीय कुर्मी क्षत्रिय महासभा महाराष्ट्र प्रदेश पदाधिकारियों की घोषणा

मुंबई(उत्तरशक्ति)। अखिल भारतीय कुर्मी क्षत्रिय महासभा के महाराष्ट्र प्रदेश अध्यक्ष संजय पाटील ने आज प्रदेश कार्यकारिणी के नव नियुक्त पदाधिकारियों की घोषणा की। घोषित सूची निम्नलिखित है जिसमें प्रदेश अध्यक्ष संजय पाटील, महासचिव जयेश शेलार पाटील, कोषाध्यक्ष संदीप काळे पाटील, संरक्षक मंडल ब्रिगेडियर सुधीर सावंत, डॉ. बाबूलाल सिंह पटेल, नरेश आखरे पाटील, नि. डेप्युटी कलेक्टर बी. बी. ठाकरे, किसन बोंद्रे, डॉ. राकेश कनोजिया, प्रा. नरेश चंद्र काठोळे, एड. आप्पासाहेब कड, शाहीर उत्तम गायकर शामिल है। अन्य प्रमुख पदाधिकारी युवा प्रदेश अध्यक्ष प्रमोद ठोंबे पाटील, महिला प्रदेश अध्यक्षा डॉ. शोभाताई गायकवाड, उद्योग प्रदेश अध्यक्ष समीर पाटील, प्रदेश उपाध्यक्ष प्रा. बी. एन. शिंदे, दिनेश दळवी, सुबोध कुमार, जयराम पांडियार,प्रदेश प्रवक्ता अँड. अलकाताई मोरे पाटील, प्रदेश विधी सलाहकार अँड. हनुमंत जाधव, प्रदेश संघटक गणपती कंदरस्वामी देवेंद्र,विभागीय अध्यक्ष कोकण विभाग तुकाराम पष्टे, नाशिक विभाग डॉ. संजय गायकवाड, पुणे विभाग प्रा. विलास आंबेकर, छत्रपति संभाजीनगर विभाग प्रा. तानाजी भोसले, अमरावती विभाग डॉ. शरद बावणे पाटील है। इस अवसर पर अखिल भारतीय कुर्मी क्षत्रिय महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष वी. एस. निरंजन (सेवानिवृत्त IAS), पूर्व अध्यक्ष एल. पी. पटेल, राष्ट्रीय महासचिव उमेश पटेल, एवं वरिष्ठ समाजसेवी डॉ. बाबूलाल सिंह ने सभी नव नियुक्त पदाधिकारियों को शुभकामनाएं प्रेषित की हैं और संगठन की एकजुटता और सामाजिक उत्थान के लिए उनके योगदान की आशा जताई है।

मुजफ्फरपुर में उत्तर बिहार के सबसे बड़े रेडियोथेरेपी सेंटर की स्थापना

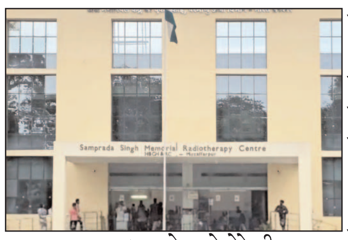

मुजफ्फरपुर। अल्केम लेबोरेटरीज लिमिटेड अल्केम की कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व इकाई अल्केम फाउंडेशन ने बिहार के मुजफ्फरपुर में सम्प्रदा सिंह मेमोरियल रेडियोथेरेपी सेंटर की स्थापना में 100 करोड़ रुपए का निवेश किया है। यह रेडियोथेरेपी सेंटर उत्तर बिहार का सबसे बड़ा तथा पूरे राज्य का दूसरा सबसे बड़ा सेंटर है। यह सेंटर होमी भाभा कैंसर हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर का हिस्सा है, जिसका उद्घाटन भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदीने हाल ही में किया था। अल्केम के संस्थापक और चेयरमैन एमेरिटसए स्वर्गीय सम्प्रदा सिंह को श्रद्धांजलि के रूप में स्थापित इस आधुनिक रेडियोथेरेपी सेंटर की स्थापना टाटा मेमोरियल सेंटरए मुंबई टीएमसी के साथ साझेदारी में की गई है। यह साझेदारी अल्केम के स्वास्थ्य सेवा में सामाजिक योगदान की प्रतिबद्धता और टीएमसी के कैंसर देखभाल और रिसर्च के अनुभव को साथ लाती है। तकनीकी दृष्टि से यह सेंटर बिहार की सबसे एडवांस रेडियोथेरेपी सुविधा है और पूरे पूर्वी भारत के शीर्ष तीन से चार केंद्रों में शामिल है। यहाँ लिनियर एक्सेलेरेटर एलआईएनएसी, स्टीरियोटैक्सी, ऑर्गन मोशन मैनेजमेंट सिस्टम, सीटी सिम्युलेटर और इन.हाउस ब्रैकीथेरेपी जैसी आधुनिक सुविधाएँ उपलब्ध हैं। इस सेंटर में हर साल लगभग 3, 500 से 4, 000 कैंसर मरीजों का इलाज करने की क्षमता है। इसका उद्देश्य बिहार और आसपास के क्षेत्रों के मरीजों को घर के पास ही विश्व.स्तरीय उपचार उपलब्ध कराना है। अल्केम की एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर और कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी एंड सस्टेनेबिलिटी कमेटी की चेयरपर्सन मधुरिमा सिंह ने कहा अल्केम की जड़ें बिहार से जुड़ी हैं, इसलिए हमारे लिए इस क्षेत्र के लिए योगदान देना बेहद महत्वपूर्ण है।

सेवा ही मोदी का असली जन्मदिन का तोहफा है: अश्विन सावरकर

वसईरोड। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 75वें जन्मदिन के अवसर पर, वसई फाटा, वनाये पाड़ा जिला परिषद स्कूल में एक सामाजिक सेवा पहल का क्रियान्वयन किया गया। इस अवसर पर स्कूल की मैडम को कुकर, ढक्कन और अन्य आवश्यक वस्तुएँ सौंपी गईं। आशा व्यक्त की गई कि शिक्षा के मंदिर में विद्यार्थियों की सुविधा के लिए प्रदान की गई ये सामग्री बच्चों के स्कूली जीवन में उपयोगी सिद्ध होगी। भाजपा वसई ज़िला सचिव अश्विन सावरकर के माध्यम से इस पहल का सफलतापूर्वक क्रियान्वयन किया गया। सामाजिक प्रतिबद्धता को बनाए रखते हुए, इस पहल के माध्यम से ह्जनता की सेवा से ही समाज का विकासह का संदेश दिया गया। विदर्भ युवा संगठन के उपाध्यक्ष गणेश पवार, समाजसेवी शिवम मेहता, समाजसेवी भरत कनेरा, रंजीत राजपूत और जयप्रकाश शर्मा ने इस कार्यक्रम में पहल की और सक्रिय रूप से भाग लिया। मोदीजी के कार्यों से प्रेरित होकर, समाज की भलाई के लिए उठाए गए इस छोटे लेकिन प्रभावी कदम से स्थानीय स्तर पर संतोष और कृतज्ञता का माहौल बना।

गंधर्व महाविद्यालय की 125वीं वर्षगांठ मनाई गई

नालासोपारा। नालासोपारा के के.एम.पी.डी. हाई स्कूल में श्री माधव संगीत विद्यालय द्वारा गंधर्व महाविद्यालय, लाहौर की स्थापना की 125वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में एक भव्य सांगीतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। गंधर्व महाविद्यालय की स्थापना 5 मई 1901 को सुप्रसिद्ध गायनाचार्य पंडित विष्णु दिगंबर पलुस्कर द्वारा की गई थी।

इस विशेष अवसर पर विद्यालय की संचालिका श्रीमती मनीषा आप्टे द्वारा प्रशिक्षित विद्यार्थियों ने पं. पलुस्कर की रचित चुनिंदा बंदिशों की प्रस्तुति दी, जिसे दर्शकों ने सराहा। कार्यक्रम की एक अन्य मुख्य विशेषता रही पंडित पलुस्कर द्वारा रचित बंदिशों पर आधारित पुस्तक का विमोचन, जिसे मधव संगीत विद्यालय के निदेशक मधुसूदन आप्टे ने संकलित किया है। इस पुस्तक में 28 रागों की बंदिशें, पंडित पलुस्कर द्वारा रचित व प्रकाशित ग्रंथों की सूचियाँ, उनके आवरण तथा दुर्लभ चित्रों को संजोया गया है। इसका उद्देश्य भावी संगीत साधकों और शोधकर्ताओं को उनके कार्य की समृद्ध परंपरा से जोड़ना है। पुस्तक का विमोचन नालासोपारा के विधायक व सुप्रसिद्ध गायक पं. भरत तेलंग, राजन नाडक, श्रीमती शोभना अभ्यंकर तथा दत्तात्रेय देशमुख द्वारा किया गया। इस अवसर पर विद्यार्थियों को अंकतालिकाएँ भी वितरित की गईं। गायन में विशारद परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली श्रीमती सुविधा नाइक एवं श्रीमती मंगला नाइक को दत्तात्रेय देशमुख ने अपनी बहन श्रीमती दुर्गाबाई की स्मृति में दिए गए दान से पुरस्कार प्रदान किए। श्रीमती शोभना अभ्यंकर ने अपने दिवंगत पति, प्रसिद्ध तबला वादक प्रभाकर अभ्यंकर की स्मृति में विद्यालय को रिकॉर्डिंग स्टूडियो की स्थापना हेतु दान दिया है। इसके अंतर्गत तबला विषय में विशारद परीक्षा में प्रथम आने वाले विग्नेश पालकर व नम्रता सावंत को पुरस्कार प्रदान किया गया। कार्यक्रम का सुंदर संचालन विद्यालय की छात्रा व लोकप्रिय सूत्रसंचालिका क्षितिजा लोखंडे ने किया।

स्वस्थ नारी, सशक्त परिवार अभियान का सफल आयोजन

वसई। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में वसई विरार नगर निगम के चिकित्सा स्वास्थ्य विभाग द्वारा आज वसई पश्चिम स्थित सर डी.एम. पेटिट अस्पताल, झंडा बाजार, पार नाका में स्वस्थ नारी, सशक्त परिवार नामक विशेष स्वास्थ्य अभियान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर वसई की विधायक स्नेहा दुबे मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहीं। यह अभियान केंद्र व राज्य सरकार के मार्गदर्शन में महिला स्वास्थ्य और सशक्तिकरण के प्रति ध्यान में रखते हुए आयोजित किया गया था, जिसका उद्देश्य पूरे परिवार के समग्र स्वास्थ्य को सुदृढ़ बनाना है। अभियान के अंतर्गत महिलाओं के लिए निशुल्क स्वास्थ्य जांच, परामर्श सेवाएं, जागरूकता कार्यक्रम, किशोर स्वास्थ्य, मातृ-शिशु देखभाल, टीकाकरण, कुपोषण निवारण, क्षय रोग जांच, आयुष्मान भारत योजना की जानकारी और रक्त परीक्षण जैसी सुविधाएँ उपलब्ध कराई गईं। स्वास्थ्य शिविर में बड़ी संख्या में महिलाओं, बच्चों और पुरुषों ने भाग लिया, जिससे यह स्पष्ट हुआ कि नागरिक इस प्रकार की स्वास्थ्य पहलों के प्रति जागरूक और उत्साहित हैं। यह कार्यक्रम महिलाओं के स्वास्थ्य और उनके अधिकारों के प्रति समाज की बदलती सोच को भी दर्शाता है। इस मौके पर वसई विधायक स्नेहा दुबे ने कहा, स्वस्थ नारी ही सशक्त समाज और समृद्ध राष्ट्र की आधारशिला होती है। ऐसी पहलों से हम न केवल महिलाओं को बल्कि पूरे परिवार को सशक्त बना सकते हैं। उन्होंने चिकित्सा विभाग के प्रयासों की सराहना की और नागरिकों से नियमित स्वास्थ्य जांच कराने की अपील की। कार्यक्रम में वसई विरार शहर मनपा आयुक्त मनोज कुमार सूर्यवंशी, अतिरिक्त आयुक्त दीपक सावंत, स्वास्थ्य विभाग के उपायुक्त प्रशांत जाधव, मनपा स्वास्थ्य अधिकारी श्रीमती भक्ति चौधरी, वसई शहर मंडल अध्यक्ष श्रीमती गीतांजलि दरीवाला समेत अनेक अधिकारी, पदाधिकारी और गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। कार्यक्रम के समापन पर स्नेहा दुबे ने उपस्थित सभी लोगों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह पहल महिला सशक्तिकरण और स्वास्थ्य के क्षेत्र में मील का पत्थर साबित होगी।

विरार रेलवे आर पी एफ निरीक्षक द्वारा महिला सुरक्षा जागृत अभियान सम्पन्न

विरार, मुंबई। विरार आरपीएफ निरीक्षक डॉ जे.पी. मीणा के निर्देशानुसार विरार स्टेशन के प्लेटफार्म क्रमांक 2 पर अरकसतीश भोर एवं महिला स्टाफ द्वारा महिला कोचों में महिला सुरक्षा जागरूकता अभियान चलाया गया, अभियान के दौरान यात्रियों को बताया गया कि यात्रा के दौरान किसी भी समस्या या असुरक्षा की स्थिति में वे रेलवे हेल्पलाइन नंबर 7229034690 या 139 पर संपर्क कर सकती हैं। साथ ही, चलती ट्रेन में चढ़ने से बचने और दरवाजे पर खड़े होकर यात्रा न करने के लिए भी जागरूक किया गया।फ्द्धद्वारा यह अभियान महिलाओं की सुरक्षित यात्रा सुनिश्चित करने हेतु चलाया गया।

प्रदेश अध्यक्ष के खिलाफ अशोभनीय भाषा के इस्तेमाल पर कार्यकर्ताओं में उबाल

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। एआईएमआईएम प्रदेश अध्यक्ष श्री शौकत अली के खिलाफ अभद्र भाषा, गोली मारने की धमकी जैसे असंसदीय-अशोभनीय भाषा मंसूबाबंद साजिश के तहत सोशल मीडिया के द्वारा चलाया जा रहा है। जिसके विरोध में एआईएमआईएम जिला इकाई जिलाध्यक्ष इमरान बंटी के नेतृत्व में दर्जनों कार्यकताओं के साथ कलेक्ट्रेट पहुँच कर एसपी सिटी महोदय को तहरीर सौंपी और करवाई की मांग किया इस मौके पर जिलाध्यक्ष ने कहा कि कैबिनेट मंत्री श्री ओमप्रकाश राजभर, अरुण राजभर टीवी चैनल के माध्यम से श्री शौकत अली के खिलाफ मंसूबाबंद तरीके से भड़का रहे हैं। जिसके बाद सोशल मीडिया पर भारी संख्या में श्री शौकत अली को धमकी दी जा रही है । उन्होंने कहा कि प्रदेश अध्यक्ष के खिलाफ अशोभनीय भाषा को बर्दास्त नहीं किया जाएगा। संविधान और कानून के दायरे में जवाब दिया जाएगा। उन्होंने आगे कहा कि देश के किसी भी नागरिक को कानून हाथ में लेने का अधिकार नहीं है। परन्तु सुभासपा अध्यक्ष ओपी राजभर जी ढेरों वीडियो वायरल है,जहां वो कार्यकर्ताओं को पीला गमछा लगा कर कानून हाथ में लेने की वकालत करते हैं। उन्होंने कहा कि श्री शौकत अली के ब्यान से अगर कोई आहत है तो उसके लिए देश में कानून है,अदालत है, संविधान है। परन्तु कानून हाथ में लेने की इजाजत किसी को नहीं है ।

जय माता दी चैरिटेबल ट्रस्ट नवीन पनवेल आयोजित विश्वकर्मा पूजा महोत्सव संपन्न

नवी मुंबई(उत्तरशक्ति)। बुधवार 17 सितंबर को जय माता दी चैरिटेबल ट्रस्ट नवीन पनवेल द्वारा आयोजित विश्वकर्मा पूजा महोत्सव श्री वृंदावन बाबा मंदिर हॉल, सेक्टर 5 ए, नवीन पनवेल में श्रद्धा एवं भक्तिभाव तथा हर्षोल्लास के साथ धूमधाम से संपन्न हुआ। इस अवसर पर मान्यवरों ,श्रद्धालुओं व भाविकों ने बड़ी संख्या में उपस्थित होकर भजन कीर्तन में भाग लिया, दर्शन किया एवं महाप्रसाद ग्रहण किया।

मान्यवरों ने अपने संदेश में बताया कि यह उत्सव प्रायः मुख्य तौर पर विश्वकर्मा के पांच पुत्रों मनु, मय, त्वष्टा, शिल्पी और देवज्ञ की संतानों द्वारा मनाई जाती है। यह कारखानों एवं औद्योगिक क्षेत्रों में विशेष रूप से मनाया जाता है। विश्वकर्मा को विश्व का निमार्ता तथा देवताओं का वास्तुकार माना गया है। भगवान विश्वकर्मा जयंती के दिन- फैक्ट्रियों, कार्यशालाओं और उद्योगों में इंजीनियर, आर्किटेक्ट, शिल्पकार, ड्राइवर आदि लोग इस दिन उनकी विशेष पूजा करते हैं। विश्वकर्मा जी ने जो भी निर्माण किया, वह अत्यंत सुंदर,टिकाऊ और कलात्मक था। कोई भी कार्य छोटा या बड़ा नहीं होता, यदि उसे पूरी निष्ठा और कुशलता से किया जाए। मान्यवरों को अंग वस्त्र एवं पुष्प गुच्छ देकर सत्कार भी किया गया। इस अवसर पर शिवसेना के रामदास शेवाले - रायगड जिला प्रमुख, व्यवसायी मनोरंजन सिंह, प्रजापति समाज विकास मंडल के राष्ट्रीय अध्यक्ष चंद्र प्रताप प्रजापति सहित कई मान्यवारों ने पूजा में भाग लिया और दर्शन किया। कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए सत्यनारायण शर्मा अध्यक्ष, जयप्रकाश जायसवाल उपाध्यक्ष, प्रयाग शाह सचिव, मुंशी पंडित कोषाध्यक्ष, विनोद सिंह- सलाहकार, रामप्यारे शाह, राजनाथ पासवान एवं दूधनाथ शर्मा सदस्य गण आदि ने विशेष मेहनत किया।

स्वर्णकार समाज के लिए महाराष्ट्र सरकार का ऐतिहासिक निर्णय

अब बिना प्राथमिक जांच के नहीं होगी गिरफ्तारी

(-मयूर सोनी) मुंबई। महाराष्ट्र सरकार ने स्वर्णकार (सुनार) समाज के हित में एक ऐतिहासिक निर्णय लेते हुए उन्हें राहत प्रदान की है। अब किसी भी सुनार पर चोरी का आरोप लगने की स्थिति में तुरंत गिरफ्तारी नहीं की जाएगी। सरकार ने भारतीय दंड संहिता (IPC) की धारा 411 को नए भारतीय न्याय संहिता (BNS) की धारा 317 में परिवर्तित करते हुए यह प्रावधान किया है कि गिरफ्तारी से पहले कम से कम 15 दिनों की प्राथमिक जांच अनिवार्य होगी। यह निर्णय महाराष्ट्र को देश का पहला राज्य बनाता है जिसने सुनारों के हित में इतना बड़ा और संवेदनशील कदम उठाया है। इस निर्णय से पूरे सुवर्णकार समाज में खुशी की लहर दौड़ गई है, और उन्होंने इस फैसले का तहे दिल से स्वागत किया है। भाजपा नेता चित्रा ताई वाघ ने इस ऐतिहासिक निर्णय की जानकारी साझा करते हुए सरकार की पहल की सराहना की। वहीं, मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस को राजस्थानी सुवर्ण समाज की ओर से आभार प्रकट किया गया है। यह बदलाव न केवल एक सामाजिक सुधार है, बल्कि यह व्यापार में पारदर्शिता, भरोसे और न्याय की दिशा में एक सकारात्मक पहल भी है।

यूथ आइकॉन्स फाउंडेशन ने की अनोखी पहल

वसई रोड। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिन के अवसर पर, सेवा पखवाड़ा 2025 एक महत्वपूर्ण पहल के रूप में शुरू किया गया है जिसका उद्देश्य समाज के कमजोर वर्गों तक कल्याणकारी सेवाओं का विस्तार करना, जन जागरूकता बढ़ाना और कल्याणकारी योजनाओं का लाभ जमीनी स्तर तक पहुँचाना है। इस नेक मिशन के तहत, यूथ आइकॉन्स फाउंडेशन ने 17 सितंबर 2025 को आशा सदन आश्रम में एक विशेष लंच कार्यक्रम का आयोजन करके इस समारोह में गर्व से भाग लिया। फाउंडेशन हमेशा से सामाजिक कल्याणकारी पहलों का समर्थन करने और सामुदायिक सेवा में युवाओं की भागीदारी को प्रोत्साहित करने के लिए प्रतिबद्ध रहा है। हम इस आयोजन के दौरान आशा सदन आश्रम के कर्मचारियों और बच्चों के गर्मजोशी और सहयोग के लिए उनका तहे दिल से धन्यवाद करते हैं। हम अपनी समर्पित टीम के सदस्यों - मनोज शांडिल्य (संस्थापक), अमित दुबे, सौरभ सिंह, हेमंत पटेल, अनीता पांडे, विनीत सिंह, दिव्या बरनवाल, सनी रावल, सुमित विश्वकर्मा और अन्य का भी विशेष आभार व्यक्त करते हैं, जिनके प्रयासों ने इस पहल को प्रभावशाली और यादगार बनाया। यूथ आइकॉन्स फाउंडेशन समाज को सशक्त बनाने और युवाओं को सेवा और सामाजिक उत्तरदायित्व के माध्यम से राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए प्रोत्साहित करने के अपने दृष्टिकोण पर अडिग है। हम मिलकर समाज को सशक्त बनाने और युवाओं को राष्ट्र निर्माण के लिए प्रेरित करने की दिशा में काम करना जारी रखेंगे।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिवस पर विधायक स्नेहा दुबे ने किए वसई में 22 विकास कार्यों का लोकार्पण

वसई। भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिवस एवं मराठवाड़ा मुक्ति संग्राम दिवस के अवसर पर मुख्यमंत्री समृद्धि पंचायत राज अभियान के अंतर्गत वसई विधानसभा क्षेत्र की विधायक श्रीमती स्नेहा ताई दुबे पंडित ने पोमन गांव में विकास कार्यों का भव्य लोकार्पण एवं शिलान्यास किया। इस अवसर पर समूह ग्राम पंचायत पोमन कार्यालय के जीर्णोद्धार एवं विस्तार कार्य तथा पोमन में नवनिर्मित भव्य सामुदायिक मंदिर का उद्घाटन विधायक स्नेहा ताई दुबे पंडित के करकमलों द्वारा किया गया। इसके साथ ही पोमन, मोरी एवं शिलोत्तर गाँवों में नागरिकों की सुविधा एवं सर्वांगीण विकास हेतु कुल 22 विकास कार्यों का ऑनलाइन लोकार्पण भी सम्पन्न हुआ। इन कार्यों में निम्नलिखित प्रमुख योजनाएं शामिल थीं। जिसमें पोमन मैदान में चबूतरे का निर्माण, व्यक्तिगत लाभ योजना के अंतर्गत सामग्री वितरण, कचरा ढोने वाले ट्रकों की खरीद, नए एवं विकसित श्मशान घाटों का निर्माण (पोमन, मोरी, शिलोत्तर), जिला परिषद विद्यालयों में खेल मैदान हेतु पेवर ब्लॉक का कार्य, मोरी में सेल्फी पॉइंट, छत, प्रतीक्षालय, लकड़ी भंडारण एवं कार्यालय विस्तार, मोरी एवं शिलोत्तर की आंतरिक सड़कों का कंक्रीटीकरण और पेवर ब्लॉक लगाना, विधायक स्नेहा ताई दुबे ने कहा, ये कार्य ग्रामवासियों की सुविधाओं को बढ़ाने के साथ-साथ वसई क्षेत्र के विकास को नई दिशा देंगे। मैं वसई विधानसभा क्षेत्र के सर्वांगीण विकास के लिए सदैव तत्पर हूँ। इस भव्य कार्यक्रम में ग्राम विकास अधिकारी चव्हाण, भाजपा जिला उपाध्यक्ष राजू म्हात्रे, पोमन ग्राम पंचायत के सरपंच आत्माराम ठाकरे, उपसरपंच दिनेश म्हात्रे, ग्राम पंचायत सदस्यगण, भाजपा के पदाधिकारी, कार्यकर्ता तथा बड़ी संख्या में ग्रामीण जन उपस्थित रहे।

जिला स्तर पर विजेता रही स्कूल टीम के खिलाड़ियों का किया अभिनंदन

चिराना। चिरानियां शिक्षण संस्थान माध्यमिक विद्यालय, बागोरियां की ढाणी में 69 वीं जिला स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता में जिला स्तर पर विजेता रही टीम के खिलाड़ियों के सम्मान में समारोह का आयोजन हुआ। 69 वीं जिला स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता में 14 वर्षीय आयु वर्ग में छात्रा व छात्र वर्ग में आयोजित हुई खो-खो प्रतियोगिता में इस विद्यालय की दोनों टीमें जिला स्तर पर विजेता रही। एडवोकेट मोतीलाल सैनी उदयपुरवाटी की अध्यक्षता में आयोजित समारोह के मुख्य अतिथि डॉ राजेंद्र कुमावत रहे। इस समारोह में अतिथियों ने विजेता टीम के खिलाड़ियों का पुष्प माला, मेडल व साफा पहनाकर अभिनंदन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि डॉ राजेंद्र कुमावत ने विजेता टीम के खिलाड़ियों को संबोधित करते हुए कहा कि खेलों से ही युवाओं का शारीरिक एवं मानसिक विकास संभव है। खेल प्रतियोगिताओं से भाईचारे व सामाजिक सद्भाव की प्रवृति विकसित होती है। कार्यक्रम के अध्यक्ष एडवोकेट मोतीलाल सैनी उदयपुरवाटी ने कहा कि वर्तमान समय स्पोर्ट्स के क्षेत्र में रोजगार के स्वर्णिम अवसर हैं। सैनी ने कहा कि इस प्रकार की खेल प्रतियोगिताओं के आयोजन से क्षेत्र में छुपी हुई प्रतिभाओं को आगे बढ़ने के अवसर प्राप्त होते हैं। विद्यालय निदेशक ओमप्रकाश सैनी ने सभी का आभार व्यक्त करते हुए, विजेता टीम के खिलाड़ियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की। प्रधानाध्यापिका सुनीता सैनी ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। इस दौरान टीम के कोच प्रभारी प्रयास सैनी, सूरजभान सिंगोदिया, महेश कुमार ओलखा, महेश सैनी, नेमीचंद सैनी, आशा सैनी, ईशू कंवर, सरिता सैनी, सुनीता सैनी, सुमन वर्मा आदि उपस्थित रहे।

एयरपोर्ट के नाम पर किसानों की जमीन छीनने के खिलाफ प्रदर्शन

आजमगढ़ (उत्तरशक्ति)। 18 सितंबर 2025। किसान एकता समिति द्वारा एयरपोर्ट के नाम पर किसानों की जमीन छीनने के खिलाफ आजमगढ़ जिला मुख्यालय पर प्रदर्शन किया गया। मंदुरी क्षेत्र के बीसियो गावों के किसानों ने प्रधानमंत्री के नाम चार सूत्री ज्ञापन जिलाधिकारी के माध्यम से भेजा। सैकड़ों की संख्या में किसान जजी मैदान से एयरपोर्ट का विस्तारित कर नहीं होगा, किसानों की जमीन छीनना बंद करो, किसान एकता समिति जिंदाबाद के नारे लगाते हुए जिला अधिकारी कार्यालय पहुंचे। प्रशासनिक अधिकारी राजीव कुमार ने ज्ञापन लिया। किसानों ने कहा कि एयरपोर्ट के विस्तारीकरण से ग्राम वासियों का विकास नहीं, विनाश होगा। किसानों ने सालों पहले कह दिया कि जमीन नहीं देंगे और भारत सरकार के मंत्री ने भी कह दिया है कि कोई प्रस्ताव नहीं है तो किस आधार पर सर्वे की बात कही जा रही है। भारत कृषि प्रधान और गावों का देश है खेती और आबादी उजाड़ने से देश कमजोर होगा। एयरपोर्ट विस्तारीकरण के नाम पर बहुफसली जमीन छीनने का प्रबल विरोध होगा।